ज्ञानामृत

जून, 1983
वर्ष 18 ❋ अंक 12

मूल्य 1.25

1.व्यवहार - दिव्य, 2.विचार - पवित्र, 3.आहार - सात्विक, 4.विहार - आध्यात्मिक स्थान

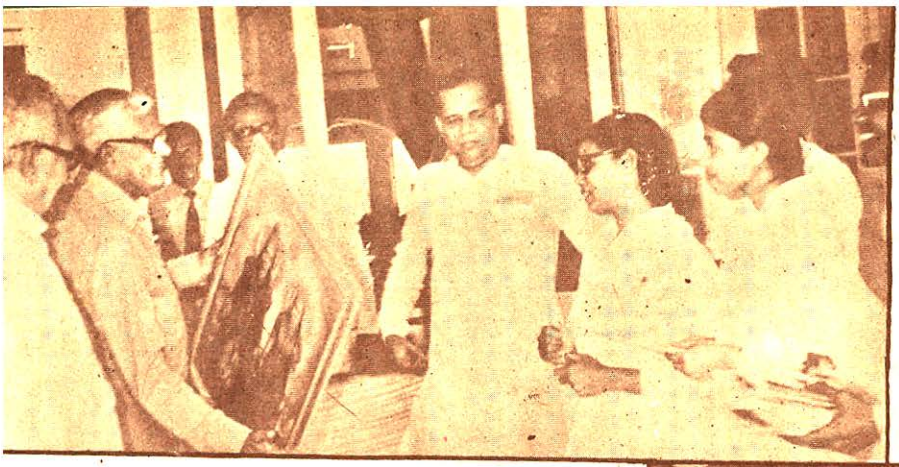

पुरी में भारत के रक्षा मन्त्री भ्राता सी० वेन्कटरमन को ब्र० कु० निरुपमा तथा प्रतिमा, श्री लक्ष्मी श्री नारायण का चित्र सौगात देते हुए। भ्राता जे० बी० पटनायक, उड़ीसा के मुख्य मंत्री, भ्राता जी मोहापात्र, शिक्षा मन्त्री उड़ीसा, पुरी के कलैक्टर तथा अन्य चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

जोगिन्द्र नगर में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल भ्राता गुलाब सिंह जी ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा आध्यात्मिक प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या सुनते हुए। ब्र० कु० प्रेम सावित्री तथा अन्य चित्र में हैं।

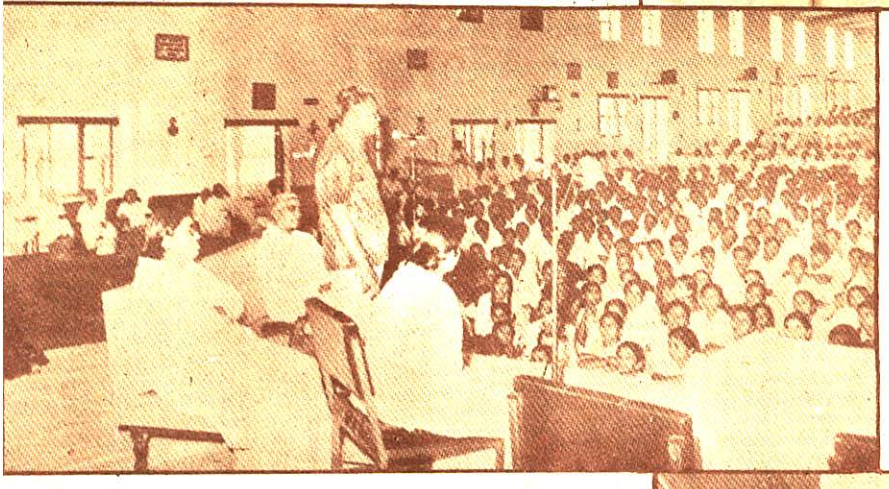

भ्राता ए० एन० सेन, न्यायाधीश उच्चत्तम न्यायालय, नई दिल्ली 11 से 13 मई तक मधुवन, माऊँट आबू की यात्रा पर पधारे। वे "युनिवर्सल पीस हाल" में अपने अनुभव सुनाते हुए।

आबू पर्वत पर पाण्डव भवन में शान्ति-स्तम्भ के समक्ष (बाएं से) ब्र० कु० निर्वैर जी, भ्राता एन० आर० चन्द्रन, महाप्रबन्धक पी० टी० आई०, दीदी मनमोहिनी जी, बहन कमला चन्द्रन, सहायक निर्देशक पूसा इंस्टीट्यूट न.दिल्ली, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, ब्र० कु० शुक्ला बहन, (पीछे) ब्र० कु० मृत्युञ्जय, ब्र०कु० सुन्दर लाल तथा भ्राता घेरा जी। भ्राता चन्द्रन तथा बहन कमला चन्द्रन ने १५ मई, १९८३ को आबू स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय के वार्षिक उत्सव में भाग लिया।

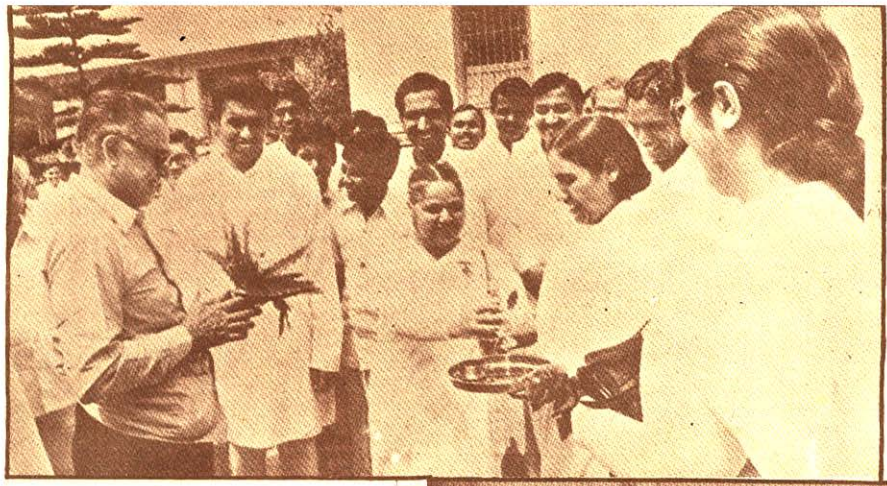

भ्राता ए० एन० सेन, न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय, के पाण्डव भवन माऊँट आबू मे पधारने पर उनका स्वागत करतीं हुई ब्र० कु० मोहिनी बहन, शशी बहन तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनें ।

पुरी में ब्र० कु० निरूपमा भ्राता के० पी० सिहदियु, भारत के उप-रक्षा मंत्री को ईश्वरीय साहित्य सौगात देते हुए । उड़ीसा के मुख्य मंत्री भ्राता जे० बी० पटनायक भ्राता जी० मोहापात्र, उड़ीसा के शिक्षा मंत्री तथा अन्य चित्र में हैं ।

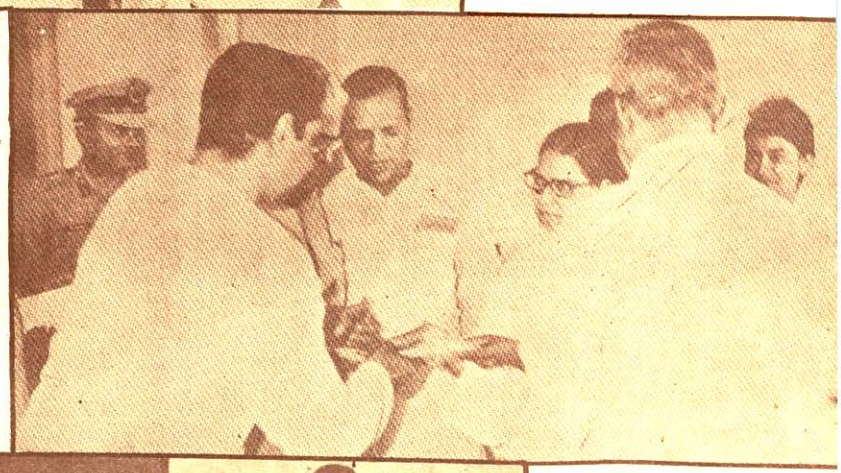

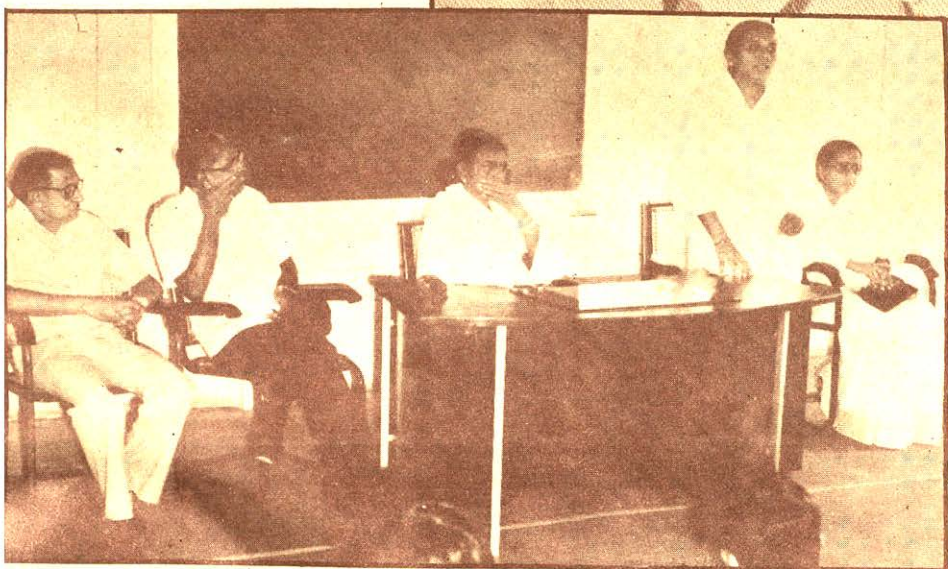

भावनगर में ब्र० कु० ऊषा, सौर ट्रेनिंग स्कूल में एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाषण करते हुए उनकी बाईं ओर ब्र० कु० गीता और दाईं ओर अनिता बहन भ्राता आर० के० मेहता बैठे हैं ।

मद्रास के दक्षिणी पश्चिम रोटरी कल[illegible]दस्यों को ब्र० कु० शिवकन्या ने सम्बोधित किया । उनके बाएं बैठे हैं विश्वनाथ रेड्डी, 'चन्दामामा' के प्रबन्धक निर्देशक तथा भ्राता सुन्द्रम जी ।

Regd. No. 10563/65-D (E)—7

माऊँट आबू में विशेष कुमारियों के लिये राजयोग का प्रशिक्षण रखा गया। कन्याओं का एक ग्रुप आदरणीय दीदी जी, दादी जी तथा अन्य शिक्षिकाओं के साथ।

हिसार में आध्यात्मिक सम्मेलन में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० नरपत, भ्राता पी० एस० वर्मा, पूर्व सी० एम० ओ०, भ्राता शिवराम जिन्दल (जिन्दल इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड) ब्र० कु० दादी इन्द्रमणि तथा ब्र० कु० ब्रिजपुष्पा विराजमान हैं। ब्र० क० अमीर चन्द जी प्रवचन करते हुए।

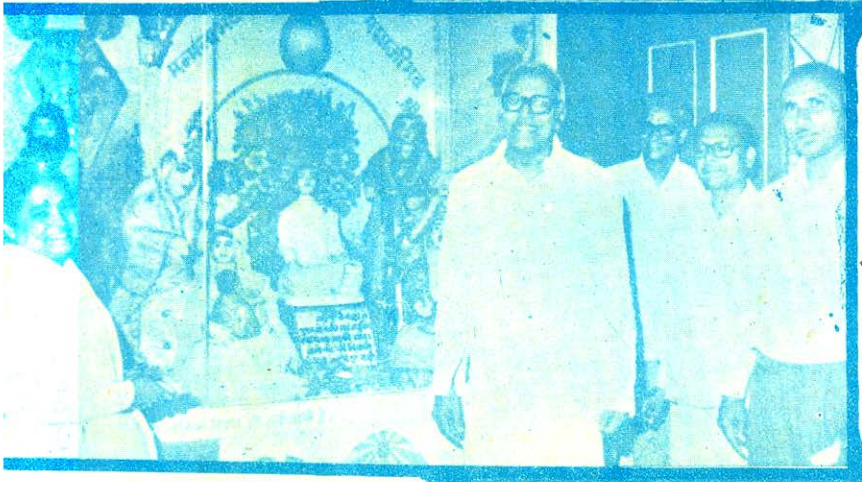

भ्राता वी० आर० कृष्णा अय्यर (पूर्व न्यायाधीश उच्चत्तम न्यायालय) नासिक सेवा केन्द्र पर पधारे। "माया मासी की फांसी" से छूटने का एक मात्र साधन शिव बाबा की याद है— ऐसा सुनकर प्रसन्न मुद्रा में।

कानपुर किदवई नगर सेवा केन्द्र की ओर से मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई यू० पी० सेवा केन्द्रों की इन्चार्ज ब्र० कु० आत्म इन्द्रा जी, ब्र० कु० दुलारी, सरिता, मुन्नी तथा अन्य साथ में खड़े हैं।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	पवित्रता से महानता (मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित)	१
२.	युक्ति से मुक्ति मिलती है (सम्पादकीय)	२
३.	दीप जलता रहेगा (कविता)	५
४.	विज्ञान एवं अध्यात्म	६
५.	आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध	८
६.	सचित्र समाचार	१०
७.	ओम शान्ति का सन्देश (कविता)	१२
८.	जब चन्द्रग्रहण ने दो राजाओं से संन्यास कराया	१३
९.	सत्यता	१५
१०.	आत्मिक-बल	२०
११.	अभी भी समय है सतयुगी प्रालब्ध पाने का	२१
१२.	सचित्र समाचार	२२
१३.	आत्मा, परमात्मा एवं सृष्टि की यथार्थ जानकारी के लिये इतिहास के यथार्थ ज्ञान और व्याख्या की आवश्यकना	२५
१४.	अनुशासन का महत्व	२९
१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३१

मुख-पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित

पवित्रता से महानता

मोर राष्ट्रीय पक्षी है। मोर के पंख को लोग विद्या प्राप्ति का प्रतीक मान कर किताबों में रखते हैं। अध्यात्म में हँस के बाद मोर ही का स्थान आता है क्योंकि यह पवित्रता का भी प्रतीक माना गया है। पुनश्च, मन की प्रसन्नता की उपमा मोर के नृत्य से की जाती है और प्रायः कहा जाता है—'नाचे रे मेरे मन का मोर'। मोर-पंख राज्य कुल-प्रतिष्ठा (Royalty) का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त मोर सांपों से भी रक्षा करता है।

अब जैसे पक्षियों में मोर को स्थान प्राप्त है, वैसे ही नैतिकता में तथा आध्यात्मिक पुरुषार्थ में शुद्ध आहार, विचार, व्यवहार, विहार और आचार को भी स्थान प्राप्त है। ये भी मोर की तरह काम, क्रोध आदि साँपों से मनुष्य की रक्षा करते हैं। इन्हें अपनाने वाला पवित्र मनुष्य ही वास्तव में श्रेष्ठ कुलीन (Royal) भी है। इन्हें धारण करने वाले को ही ईश्वरीय विद्या की ठीक धारणा होती है। इन्हें अपनाने वाले योगी का ही मन रूपी मोर सदा खुशी से नाचता रहता है।

मनुष्य के आहार का उसके विचार से सम्बन्ध है और विचार का आहार के साथ। जिसके विचार अहिंसात्मक तथा आध्यात्मिक हों वह माँसाहार नहीं करता। इसी प्रकार मांसाहार न करने से मनुष्य के विचारों का अहिंसा के प्रति झुकाव होता है। फिर, मनुष्य के विचारों का उसके संस्कार तथा व्यवहार से सम्बन्ध है। जो स्वार्थी विचारों का व्यक्ति है, वह दूसरे का शोषण करके तथा उसके साथ अन्याय करके भी अपना स्वार्थ पूर्ण करना चाहता है अथवा वह दूसरों से क्रोध करके भी अपना मतलब पूरा करता है। इस प्रकार इनमें परस्पर सम्बन्ध को समझते हुए मनुष्य को चाहिये कि आहर, विचार व्यवहार और आचार की शुद्धि का नियम पालन करे। इसको ही 'पवित्रता' कहते हैं। यह पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है। अतः मनुष्य को चाहिये कि पवित्रता का पालन करते हुए मोर वाले ताऊसी तख्त का अधिकारी बने।

ज्ञानामृत के विषय में सूचनाएं

१. ज्ञानामृत पत्रिका का नया वर्ष जुलाई मास से प्रारम्भ हो रहा है।

२. जो भी सेवा-केन्द्र पिछले वर्ष से जितनी भी अतिरिक्त पत्रिकाएं मंगाएगा उसकी आधी संख्या वी० आई० पी० सेवार्थ निःशुल्क भेजी जावेगी।

३. ज्ञानामृत का वार्षिक शुल्क १६ रुपये हैं। ज्ञानामृत का शुल्क केवल ज्ञानामृत के नाम से बी ९/१९ कृष्ण नगर देहली-११००५१ पर भेजें।

४. कृपया १० जून तक फाइनल सदस्यों की संख्या भेज दें।

सम्पादकीय

युक्ति से मुक्ति मिलती है

बाबा अपनी बातचीत के दौरान कई बार कहा करते—"बच्चे, युक्ति से मुक्ति मिलती है।" बाबा की 'मुरलियों' में भी हम यह वाक्य पढ़ते हैं। परन्तु साथ-साथ बाबा कई बार यह भी कहते हैं कि "ज्ञान के बिना गति (या सद्गति) नहीं होती" और कि "योग द्वारा ही सहज मुक्ति मिलती है; आत्मा कर्मातीत अवस्था को प्राप्त होकर मुक्तिधाम को जाती है।' अतः प्रश्न उठता है कि—"युक्ति द्वारा मुक्ति कैसे मिलती है? और, यदि ज्ञान तथा योग द्वारा भी आत्मा कर्मातीत होकर मुक्ति को प्राप्त होती है, तब क्या युक्ति, ज्ञान और योग तीनों एक ही भाव को व्यक्त करते हैं? क्या यह तीनों पर्यायवाची शब्द हैं?

युक्ति से संगत एक वृत्तान्त, एक उदाहरण

इस प्रश्न के पहले भाग के बारे में मुझे एक वृत्तान्त की याद आती है। एक बार एक पागलखाने में एक पागल किसी तरह अपने कमरे से बाहर निकल गया और तीसरी मंज़िल के कमरों के बाहर छत का जो हिस्सा थोड़ा बाहर निकला था, उस 'प्रोजेक्शन' (Projection; छज्जे) पर जा खड़ा हुआ। अचानक-से हस्पताल के वार्डन (Warden; रक्षक) ने जब देखा कि वह पागल अपने कमरे में नहीं है तो उसे ढूँढते-ढूँढते उसका ध्यान तीसरी मंज़िल के बाहर की प्रोजेक्शन पर गया। उसने सोचा कि अगर यह रोगी वहाँ से छलांग लगा देगा या पागलपन में इस पर बेपरवाही से घूमेगा तो यह मर जायगा। इसलिये कुछ अधिक सोचे बिना वह भागा और स्वयं भी वहाँ प्रोजेक्शन पर जा पहुँचा।

वहाँ पहुँच कर उसने पागल से कहा—"सुनाओ भाई, क्या हालचाल है? यहाँ क्या कर रहे हो?"

पागल बड़ी मस्ती से बोला—"सोच रहा था कि जैसे पक्षी पंख फैला कर उड़ते हुए नीचे उतरता है, मैं भी आज पक्षी की तरह फ़र्श पर उतरूँ।" ऐसा कहते हुए पागल ने मुँह को भी नीचे की ओर झुकाया और अपनी दोनों भुजाओं तथा हथेलियों को पीठ से पीछे ले जाकर पंख की तरह रूप दिया।

वार्डन डर गया और चौंका। उसने पागल को एक हाथ से तो थपथपाया और दूसरे हाथ से उसके हाथ को पकड़ लिया ताकि वह कहीं नीचे छलांग न लगा दे।

परन्तु उसने देखा कि पागल में बल बहुत है और वह उसे पकड़ कर रोक नहीं सकेगा। उसे यह भी डर था कि अगर वह पागल को ज़बरदस्ती रोकेगा तो पागल कहीं उसे ही नीचे धक्का न दे दे। परन्तु मिनटों में ही कुछ हो जाने वाला था, इसलिये जल्दी ही कुछ करना था।

अचानक वार्डन को एक **'युक्ति'** सूझी। उसने मुस्कराते हुए और दोस्ताना तरीके से पागल को कहा—"वाह भाई वाह, आप जो करना चाहते हो वह कोई बड़ी बात तो है नहीं। आप तो कोई बड़ा काम करके दिखाओ। और, मुझे विश्वास है कि आप विशेष काम कर सकते हैं!"

पागल ने कहा—"अच्छा, सुनाओ दोस्त, अगर यह बड़ा काम नहीं है तो और क्या चाहते हो?"

वार्डन ने कहा—"नीचे चलकर, फर्श से अर्श की ओर एक पक्षी की तरह उड़ कर दिखाओ। पंख तो आपको लगे हुए ही हैं। चलो, आओ, हम दोनों एक-साथ नीचे से ऊपर की ओर उड़ेंगे।" यह कहते हुए वह पागल की अंगुली प्यार से पकड़ते हुए उसे कमरे के रास्ते से नीचे ले चला। इस प्रकार उसने पागल की भी जान बचाई और अपना कर्त्तव्य भी ठीक निभाया। अगर वह पागल से ज़ोर-ज़बरदस्ती या हाथापाई करता तो दोनों ही धराम से धराशायी होते। तो सच है कि युक्ति से ही दोनों की (मौत के मुँह से) मुक्ति हुई।

एक अन्य वृत्तान्त; अन्य उदाहरण

कछ इसी प्रकार की मुक्ति की बात एक-दूसरे संदर्भ में हम आद्य शंकराचार्य की जीवन कहानी में पढ़ते हैं। शंकराचार्य घर-बार छोड़कर धर्म का प्रचार करना चाहते थे। परन्तु उनकी माँ उनके इस प्रस्ताव को स्वीकर नहीं करती थीं। शंकराचार्य ने आखिर एक युक्ति सोची।

वह एक बार अपनी मां के साथ नहाने नदी पर गये। कपड़े किनारे पर रखकर शंकराचार्य ने माँ को किनारे पर बैठने को कहा। अचानक ही नहाते-नहाते शंकराचार्य ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे।

"माँ-माँ···माँ, ओ मैं मरा ! मगरमच्छ ने मेरा पाँव पकड़ लिया ! रे कोई बचाओ···बचाओ···।"

माँ घबरा गयी और हाय-हल्ला करने लगी।

शंकराचार्य ने कहा—"माँ, एक भगवान ही बचा सकते हैं वरना आज मैं मरा, हाय मरा, अरे मगरमच्छ, माँ मैं मरा ·· कह दो मैंने अपना बच्चा भगवान को दिया। जल्दी कह दो माँ, एक सर्व-शक्तिमान भगवान ही गज को ग्रह से बचाने की भाँति मुझे बचा सकते हैं···हाय···मरा, जल्दी करो माँ···!"

जल्दी के कारण माँ से कुछ सोचा नहीं गया। उसे तो बच्चे का जीवन प्यारा था। उसने तुरन्त कह दिया—"मैंने यह बच्चा भगवान् को दिया।" फिर वह कहने लगी—"बचाओ भगवान् बचाओ ! अब यह आप ही की शरण में है; यह आप ही का बच्चा है !"

शंकराचार्य तट की ओर बढ़ने लगा। माँ ने सोचा कि शायद मगरमच्छ ढीला छोड़ता जा रहा है। उसकी आशा बंध गयी। वह फिर दोहराने लगी—"बचाओ भगवन् ! हे प्रभु बचाओ, यह आप ही का बच्चा है, इसे मैंने आपकी शरण में सौंपा है।"

इस तरह शंकराचार्य तट पर आ पहुँचे और बोले—"माँ, तूने अच्छा किया, मुझे भगवान् के हवाले कर दिया, वर्ना तो आज बचने की कोई आशा नहीं थी। तूने बचा लिया मुझे, माँ ··।"

माँ बोली—"मैंने नहीं, भगवान् ने तुझे बचाया है शंकर; इस बात को कभी मत भूलना।"

शंकराचार्य बोले—"ठीक कहती हो माँ ! तो अब से मेरा यह जीवन भगवान् ही के हवाले है; तुमने तो उसे सौंप दिया था न, माँ ? उसी ने बचाया है न मुझे ?"

माँ ने अब समझा कि शंकराचार्य किस अर्थ में उसे यह कह रहा है। धार्मिक स्वभाव की एवं श्रद्धालु माता होने के कारण उसने कह दिया—"हाँ, हो तो तुम भगवान् के ही। परन्तु क्या मुझे छोड़ जाओगे ?"

तब शंकराचार्य ने कहा –"माँ, मैं छोड़ने की भावना से नहीं जा रहा, धर्म का प्रचार करने जा रहा हूँ; जिस भगवान् ने बचाया है, नया जीवन दिया है, उसकी महिमा करने जा रहा हूँ।" इस प्रकार शंकराचार्य ने भी (माँ के मोह से) युक्ति द्वारा ही मुक्ति पाई थी।

मेरा अपना उदाहरण

मैं स्वयं जब शिव बाबा के इस अलौकिक कार्य में पूर्णतः समर्पित होना चाहता था तो मेरे लौकिक पिता मोह-ममता के वश मुझे इसके लिये स्वीकृति देने में तैयार नहीं होते थे। आखिर एक दिन उनसे यह वार्तालाप हुआ—

पिता जी—"आखिर मैं आपका पिता हूं; आपके हित ही की बात कहता हूं; आप सरकारी सेवा को न छोड़ो और घर में ही रहो !"

मैं—"निश्चय ही आप पितृवत स्नेह और शुभ भावना ही से ऐसा कहते हैं। परन्तु अब मेरा लक्ष्य ही कुछ और है। यदि आप आज्ञा दें तो आप से एक बात पूछूं ?"

पिता जी—"इसी प्रसंग में कोई बात हो तो भले ही पूछो।"

मैं—"जब मैं बहुत छोटा था तब आप अंगुली पकड़ कर मुझे बाज़ार में ले जाते थे ताकि आप मुझे रास्तों से परिचित करायें और फल-सब्ज़ी

आदि वस्तुओं की खरीदारी सिखायें। तब आपका कोई परिचित व्यक्ति मिल जाता और आप से पूछता—"यह आपका बच्चा है ?", तो आप तुरन्त कहते—"अजी, यह भगवान का बच्चा है।" ऐसा कहते हुए आप अंगुली ऊपर उठा लेते और नेत्र या मुख ऊपर की ओर कर लेते। अतः मैं तो कई बार आपके मुखारविन्द से यह सुनते-सुनते यह मान बैठा था कि मैं भगवान् का बच्चा हूँ। परन्तु आज आप कह रहे हैं कि मैं आपका बच्चा हूं और आप मेरे पिता हैं। तब में और अब में यह अन्तर कैसे पड़ गया है—बस, यही मैं जानना चाहता हूँ।"

पिताजी (मुस्कराते हुए)—"अच्छा, तो क्या तुम तब यह ध्यान से सुनते थे ? क्या तुमने इसी मन्तव्य को पक्का कर लिया था ? तुम चालाकी कर रहे लगते हो। देखो, शरीर के दृष्टिकोण से तो तुम मेरे ही बच्चे हो, आत्मा के नाते से भगवान् के बच्चे हो। इसलिये मैं तब भी ठीक कहता था और अब भी ठीक कहता हूं।"

मैं—"तो पिताजी, आप मेरा शरीर रख लो, मुझ आत्मा को पिता परमात्मा के पास जाने दो !"

मेरे लौकिक पिता भी धर्म-प्रिय व्यक्ति थे। वे खिलखिलाने लगे और बोले—"तुम मानोगे तो नहीं। तुम भगवान् के हो चुके हो तो रोकूं भी कैसे ? फिर बात यह है कि तुम्हारे बचपन में मैं अपने मित्रों से जब कहता था कि—"यह भगवान् का बच्चा है," तब मैंने यह सोचा ही नहीं था कि तुम इस बात को पकड़ लोगे।"

खैर, हमें तो इस युक्ति से (लौकिकता से) मुक्ति मिल गयी।

"युक्ति से मुक्ति" की जो कहावत है, इसके बारे में कई दृष्टान्त और वृत्तान्त बताये जा सकते हैं। मान लीजिये कि किसी को हलवा बनाना है। अब पहले तो उसे यह मालूम होना चाहिये कि हलवा बनाने के लिए सूजी, घी, चीनी, पानी, अग्नि, बर्तन आदि की आवश्यकता है। फिर उसे हलवा बनाने की युक्ति भी मालूम होनी चाहिये। यदि उसने पहले सूजी को घी में भूनने की बजाय पहले सूजी में पानी डाल दिया और फिर घी और चीनी डाल दी तब वह या तो कच्चा-पक्का सत्तू-सा बन जायगा या मीठी लेई ही बन जायगी। युक्ति के बिना न हलवा बनेगा और न उस व्यक्ति को (भूख से) मुक्ति मिलेगी।

अब इसी प्रकार, ईश्वरीय ज्ञान द्वारा तो मनुष्य को यह बोध होता है कि आत्मा क्या है, परमात्मा का क्या परिचय है, आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध क्या है, इत्यादि। योग में उसे योगी जीवन के नियम, लाभ आदि-आदि का परिचय मिलता है। परन्तु यदि परमात्मा युक्ति का प्रयोग न करें तो शायद कोई भी इनका पूरी तरह अभ्यास नहीं करेगा। बाबा सभी को उत्साहित करते हैं कि योग सहज है, ज्ञान तो तीन दिन में भी समझ आ जाता है और आप ही तो पहले देवी या देवता 'थें; आप विशेष आत्मा हैं, 'सिक्कीलधे' हैं, मैं आपको अपनी पलकों पर बिठा कर ले जाऊँगा; मैं आपके सिर पर ताज देखता हूं, आदि-आदि।

इस प्रकार, बाबा देहाभिमान और लौकिकता से छुड़ा कर आत्मा का स्नेह स्वयं (परमात्मा) से जोड़ देते हैं। वे कभी विनाश की बात बताकर मुर्दा हुई दुनिया से मुख मोड़ते हैं, कभी कोई सौगात देकर, कभी वे महिमा करके अपना साथी और सहयोगी बनने की बात कहते हैं तो कभी वे अपने हाथों से 'टोली' (प्रसाद) देते हैं। इस प्रकार वे अनेक युक्तियों से ज्ञान तथा योग के मार्ग पर चलाते चलते हैं। मुक्ति और जीवन-मुक्ति होती तो ज्ञान और योग ही से है परन्तु युक्ति के बिना मनुष्य ज्ञान और योग पथ पर ही नहीं चलता, और जब वह ज्ञान एवं योग को ही नहीं अपनाता तो उसे मुक्ति कैसे मिलेगी ?

फिर योग की भी युक्ति है। योग लगाने के लिये पहले स्वयं को 'आत्मा' निश्चय करना है—यह युक्ति ही तो है। यह युक्ति न आने के कारण पहले

लोग अपने मन को परमात्मा में स्थित ही नहीं कर पाये क्योंकि वे देहाभिमान से ही न्यारे नहीं हो पाते थे। इसके अतिरिक्त, बाबा अनेक युक्तियों से ही योग-स्थित करते हैं। वह कहते हैं—"देखो, अपने लौकिक मित्र-सम्बन्धियों को तो आप जन्म-जन्मान्तर याद करते ही आये हो; बस आप केवल याद को स्थानान्तरित (ट्रांस्फ़र) करो!" इस प्रकार, जो व्यक्ति पहले विकारों तथा देहाभिमान की दलदल में फँसा था, अब बाबा उसे युक्ति से ही मुक्ति दिलाते हैं। जैसे वार्डन ने नीचे से ऊपर उड़ने की बात कहकर युक्ति से पागल को छज्जे से हटाया था, वैसे ही शिव बाबा भी युक्ति से ही मनुष्य को पवित्रता, ज्ञान और योग के मार्ग पर चला कर मुक्ति दिलाते हैं। वार्डन की तरह बाबा भी कहते हैं कि आप भी ऊपर से नीचे गिरने की बजाय नीचे से ऊपर उड़कर दिखाओ। बाबा भी कहते हैं कि शंकराचार्य से भी अधिक महान् युक्ति से स्वयं को लोक-कल्याण की सेवा के लिये मुक्त करो।

—**जगदीश**

दीप जलता रहेगा

(ब्र०कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली)

आँधी कितनी भी तेज़ हो—
दीप जलता रहेगा,
प्रकाश करता रहेगा,
गर—
बाति लम्बी और घृत खूब हो।

×

तूफाँ कितना भी तेज़ हो—
पौधा बढ़ता रहेगा,
फल देता ही रहेगा,
गर—
जड़ गहरी और मबूज़त हो।

×

समस्या कितनी भी विकट हो—
गीत बजता रहेगा,
स्वर बढ़ता रहेगा,
गर—
मन में उमंग भरपूर हो।

×

धप कितनी भी तेज़ हो—
पंछी उड़ता ही रहेगा,
हद पार करके रहेगा,
गर—
पिंजड़ा टूटा और पंख मजबूत हों।

×

अंधकार कितना भी गहन हो,
राही चलता रहेगा,
कभी न रुकेगा,
गर—
लक्ष्य पक्का और कदम मज़बूत हों।

×

खाता कितना भी कड़ा हो—
योगी अचल रहेगा, श्री मत पे चलेगा,
माया से न डरेगा, सेवा पे रहेगा,
गर—
बाबा से प्यार अटूट हो,

×

लगन में मगन और अनुभव मूर्त्त हो,
आँधी कितनी भी तेज़ हो—
दीप जलता रहेगा।
प्रकाश करता रहेगा॥

—०—

विज्ञान एवं आध्यात्म

डा० निरंजन मिश्र, एम. ए. पी एच. डी, अलवर

सदियों से विज्ञान एवं आध्यात्मवाद को न केवल पृथक-पृथक वस्तुएँ समझा जाता रहा है वरन कई संदर्भों में परस्पर विरोधी समझा जाता रहा है। तकनीकी एवं उद्योगप्रधान पश्चिमी देशों में आध्यात्मवाद को प्रतिक्रियावाद (रिएक्शनरी) के रूप में लिया गया, पलायनवाद माना गया। द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व तक पश्चिमी देशों में इसे प्रतीकवाद, रहस्यवाद और कहीं-कहीं ढोंग मानकर नकारा जाता रहा। परन्तु धीरे-धीरे वहाँ भी यह अनुभव किया गया कि भले ही मानव चाँद पर पहुंच गया है, उसने कम्प्यूटर्स का निर्माण कर लिया है परन्तु उसका अपने स्वयं के बारे में ज्ञान बहुत नगण्य है। मानव नाम का जीव, उसकी संरचना, उसकी चेतनाशक्ति, मानव की मानसिक ग्रंथियां, कुंठाएँ आज भी उतनी ही रहस्यमय हैं। वह कौन है जो मनुष्य तन के अन्दर बोलता है ?

क्यों एक मनुष्य क्रूर है ? क्यों दूसरा दयालु ?

क्या सचमुच आँखें देखती हैं और कान सुनते हैं ?

मानवतन के छोटे से हिस्से मस्तिष्क में १० से १५ करोड़ की संख्या में कोषिकाएँ विद्यमान हैं जो मानव के क्रिया कलापों को नियंत्रित करती हैं। चिकित्सा विज्ञान के इतने विकास के बावजूद क्या मानव अपने शरीर और उसकी क्रियाओं को पूर्ण रूपेण जान पाया है ?

इसी प्रकार ब्रह्माण्ड के बारे में क्या ज्ञान प्राप्त हुआ ? कहाँ तक पहुंचे हम ? केवल सौर्यमंडल के कुछ ग्रहों की ऊपरी सतह तक ! जबकि सचाई यह है कि ब्रह्माण्ड में सौर्यमंडल जैसे अरबों सौर्यमंडल हैं। तो सचाई यह है कि आज विज्ञान के समक्ष मानव एवं ब्रह्माण्ड बड़े प्रश्न चिह्नों के रूप में हैं जिनकी अधिकाधिक जानकारी विज्ञान का लक्ष्य है।

अब ज़रा देखें आध्यात्मवाद का क्या लक्ष्य है। आत्मा का ज्ञान, परमात्मा का ज्ञान, परमधाम का ज्ञान, प्रकृति का ज्ञान – यही तो है ना ? फिर कहाँ रहा अन्तर आध्यात्म एवं विज्ञान में। बल्कि सचाई तो यह है कि दोनों का लक्ष्य एक ही है। इसे सही रूप में यूं व्यक्त किया जा सकता है—

Spirit of Science and the Science of spirituality explore the same field—the field of human and Cosmic Consciousness.

अर्थात् विज्ञान की 'स्पिरिट्' या मूल भावना एवं आध्यात्म का विज्ञान दोनों का लक्ष्य एक ही क्षेत्र की खोज है। कौन है नियंता इस सृष्टि का ? किस प्रकार का और क्यूं यह आवागमन व्याप्त है ? क्या 'मैकानेकल' नियम हैं इस सबके पीछे। संक्षेप में, क्या है, कौन है, कैसे है ?—यही जानने को वैज्ञानिक बेचैन है और ये ही प्रश्न समझने के पश्चात् मानव योगी बनता है।

खुशी की बात है कि इस सचाई को अब पश्चिमी देशों के विज्ञानियों ने समझ लिया है। फलतः मानव के विकास क्रम की खोज के संदर्भ में आध्यात्मवाद की सार्थकता को वे न केवल स्वीकारने लगे हैं वरन स्वयं भी उस मार्ग की ओर सच्ची लगन से आगे बढ़ रहे हैं। यहाँ तक कि सोवियत संघ जैसे समाजवादी देश में भी आत्म ज्ञान, एवं आत्मा के अस्तित्व के संदर्भ में परीक्षण हो रहे हैं।

असल में समस्या तब होती है जब हम चीज़ों को बहुत सतही रूप में देखते हैं। विज्ञान एवं आध्यात्म को एक दूसरे से पृथक या एक-दूसरे का विरोधी समझने की बात भी सतही मानसिक स्तर का ही परिणाम है। कई पढ़े लिखे भाई सवाल करते हैं। "हम कैसे मानें कि आप (ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ) जो कह रहे हैं वह सही है। आत्मा या परमात्मा का जो स्वरूप आपने बताया है उसकी सत्यता का आधार क्या है ? कि परमधाम की स्थिति सब लोकों से ऊपर है, उसका लाल रंग

है या आत्माएँ इस लोक में अपना पार्ट बजाने आती हैं या व्यक्ति को संस्कारों के अनुरूप भोग भोगने पड़ते हैं—यह सब आपका मत हो सकता है, सिद्धांत हो सकता है, थ्योरी हो सकती है—इसे सत्य कैसे माना जा सकता है। सत्य तो वह है जो विज्ञान सम्मत हो, निरीक्षण (Observation) गणना (Calculation) एवं प्रयोग (experiment) की कसौटी पर खरा उतरता हो। उसके निष्कर्ष को सत्य कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए H_2O का फार्मूला लीजिये। दो भाग हाइड्रोजन, एक भाग ऑक्सीजन के मिलने पर जो पदार्थ बनेगा वह जल ही होगा, और जल के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा। यह है सत्य। इसी प्रकार के अनेक सवाल पूछे जाते हैं। प्रश्नों का स्वरूप, विषय या 'एप्रोच' भिन्न हो सकती है पर मंशा एक ही है कि जब तक हम आँखों से देखें नहीं, विश्वास कैसे करें।

आधुनिक युग के गुण, धर्म, लक्षण एवं बौद्धिकता को देखते हुए इन भाइयों के प्रश्नों को तर्कहीन नहीं कहा जा सकता। ऐसे भाइयों के समक्ष मैं एक दृश्य उपस्थित करता हूँ। एक पहाड़ी है। पहाड़ी के एक तरफ बड़ा सुन्दर उपवन है, स्वच्छ जल से भरा हुआ एक तालाब है जिसमें कमल खिल रहे हैं। दूसरी तरफ सूखी जमीन है। पहाड़ी की चोटी पर एक आदमी खड़ा है। दूसरा आदमी पहाड़ी की दूसरी तरफ यानी सूखी जमीन वाली दिशा में खड़ा है। चोटी वाला आदमी दूसरे तरफ खड़े इस आदमी को कहता है—देखो भाई, उधर बड़ा सुन्दर उपवन है, तालाब में कमल के फूल खिल रहे हैं। परन्तु वह दृश्य पहाड़ी से नीचे खड़े हुए आदमी को तो दिख नहीं रहा, सत्यता की जाँच कैसे हो ? उसके सामने अब दो ही विकल्प हैं। या तो वह पहाड़ी के ऊपर खड़े हुए आदमी की बात पर विश्वास करे या फिर उस ऊँचाई तक पहुँचे। बगैर उस ऊँचाई तक पहुंचे ऊपर खड़े हुए आदमी की बात को झुंठलाना तो हठधर्मी है। और फिर उसके द्वारा नकारे जाने से यह सचाई मिट नहीं सकती कि दूसरी तरफ तालाब और उपवन विद्यमान हैं। इसी प्रकार से हमें अनुभवी महानुभावों की बात पर भरोसा करना होगा। केवल इसलिए कि आपको साधारणतया वह आंखों से नहीं दिखता, उसे झूठ कहना या उस पर शक करना सरासर हठधर्मी है। यह हठधर्मिता अज्ञान वश है जिसे तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता। और न इस प्रकार के तर्क का कोई औचित्य है। हाँ, उतनी ऊँचाई पर पहुंच कर अगर भिन्न अनुभव हो, तब यह सवाल करना उचित है।

ऐसे लोग विज्ञान की दुहाई तो देते हैं, विज्ञान द्वारा घोषित सत्य का उदाहरण भी पेश करते हैं पर विज्ञान की निश्चित प्रक्रिया वाले पहलू की उपेक्षा कर जाते हैं। जिस H_2O के सत्य की दुहाई दे रहे हैं। वह मालूम कैसे हुआ ? क्या घर बैठे ही आँखों के सामने उजागर हो गया। आखिर इस सत्य तक पहुंचने के लिये लम्बे समय तक निरीक्षण एवं प्रयोग किये होंगे। दूसरे शब्दों में, निश्चित वातावरण में निर्धारित प्रक्रिया द्वारा निश्चित उपकरणों के माध्यम से सतत प्रयास किया गया होगा—तभी तो यह सत्य उजागर हुआ। इसी प्रकार से योग की प्रक्रिया द्वारा वे सब तथ्य उजागर होते हैं जिन पर ये लोग शंका करते हैं। ज़रूरत बस इस बात की है कि निर्धारित प्रक्रिया से सतत अभ्यास किया जावे। आप जानते हैं हवा में लाखों जर्म्स हैं, पानी में लाखों जर्म्स हैं पर हमें आँखों से नहीं दिखते। दिखते तभी हैं जब हम लैबोरेटरी में माइक्रोस्कोप पर देखते हैं। ईश्वरीय सत्य के साक्षात्कार के लिए भी आपको लैबोरेटरी में जाना पड़ेगा। देश विदेश में फैले हुए हमारे ये सेवाकेन्द्र लैबोरेटरी ही तो हैं जहाँ पहले आपको आत्मा तथा परमात्मा के संदर्भ में 'थ्योटीकल' ज्ञान दिया जाता है फिर योग साधना के रूप में 'प्रैक्टीकल' अभ्यास के लिए प्रेरित किया जाता है। अगर आप सच्ची लगन से साधना करते हैं तो वह दिन दूर नहीं जब आपको सत्य से साक्षात्कार होगा, अवश्य होगा। बल्कि कुछ दिनों की साधना के बाद आपको स्वयं ही इस बारे में विश्वास जमने लगेगा। तो आइये इस सत्य की खोज में लीन हों। □

"आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध"

ब्र० कु० व्ही० जे० वराड्पांडे, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी, बिलासपुर (म० प्र०)

दुनिया के इतिहास में एक समय ऐसा जरूर आता है जब बहुत संख्या में लोग आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होते हैं। वह समय है अति धर्म ग्लानि का, और ठीक इसी समय भगवान धर्म स्थापनार्थ इस धरा पर भी आते हैं। वे आते हैं साधारण अजनबी की भांति और नाता जोड़ जाते हैं माता-पिता, बन्धु, सखा, शिक्षक और सद्गुरु का। कितनी अलौकिक बात है कि एक ही से अनेक संबंध ! वैसे लौकिक दुनिया में एक से एक ही संबंध होता है, इसीलिये अनेक संबंधी हो जाते हैं। अनेक संबंध एक ही से जुड़ जायें तो अनेकों को याद करने के बजाय एक ही को याद करते रहना पर्याप्त हो जाता है। एक परमात्मा ही ऐसा है जिससे न केवल सर्व संबंध जुड़ते हैं बल्कि सर्व प्राप्तियां और सर्व शक्तियां हमें मिलती हैं, क्योंकि वह है ही सर्व शक्तिवान्, ज्ञान सागर, गुणों का सागर, वर दाता।

परमात्मा से सर्व संबंधों तथा सर्व प्राप्तियों का अतीन्द्रिय अनुभव तभी हो सकता है जब हम समय की पुकार को पहचानें, अपने को पहचानें, परमात्मा को पहचानें, सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानें, स्वयं के ८४ जन्मों की कहानी को जानें तथा सृष्टि के महाविनाश का समय और उसकी आवश्यकता को समझें। इन सब बातों का ज्ञान खुद परमात्मा कलियुग के अन्त में अर्थात् घोर धर्म ग्लानि की बेला में आकर हमें देते हैं। ऐसे ज्ञान को प्राप्त कर उसे ठीक समझकर यदि उस पर गहन चिन्तन किया जावे तो सचमुच अलौकिक आनन्द और अनुभव प्राप्त हुए बिना नहीं रहेगा।

परमात्मा द्वारा दिये हुए ज्ञान की सभी बातें अनोखी, न्यारी, प्यारी, सत्यता का अनुभव कराने वाली, उलझनों को सुलझाने वाली, मनुष्य के दिल और दिमाग को दुरुस्त करने वाली, उसके कर्मों और चरित्र को श्रेष्ठ बनाने वाली तथा परिणाम स्वरूप उसे सद्गति अर्थात् स्वर्ग में स्थान दिलाने वाली हैं। ऐसे ज्ञान को धारण कर ज्ञान मूर्त्त बनने पर अनुभव यह होता है कि हमें एक दूसरा जन्म मिल गया है और आध्यात्मिक जन्म देने वाला जन्मदाता स्वयं परमात्मा है। इस प्रकार पिता-पुत्र का संबंध स्थापित हो जाता है। हम आत्माओं का वह जन्मदाता पिता होने से हम ईश्वरीय परिवार वाले उसे प्यार से "शिव बाबा" कहते हैं और वे हमें "मीठे बच्चे" कहते हैं।

आत्मा शरीर से अलग है, आत्मा चेतन है, शरीर जड़ है, शरीर आत्मा का घर है। आत्मा और शरीर अलग-अलग हैं। इसलिये उनकी सभी बातें अलग-अलग माननी ही पड़ेंगी। जैसे शरीर के माता-पिता, शिक्षक, गुरु और अन्य संबंधी होते हैं उसी प्रकार आत्मा के भी होते हैं। आत्मा के संबंधी शरीरधारी नहीं हो सकते बल्कि आत्मिक होते हैं। मनुष्य को शरीर के संबंधियों की भली भांति जानकारी है किन्तु आत्मा के संबंधियों की नहीं। क्योंकि वह यह जानता ही नहीं कि मैं वास्तव में कौन हूं। जब उसकी बुद्धि में यह बात अच्छी तरह बैठ जाती है कि मैं आत्मा शरीर से अलग हूं तब यह दृढ़ निश्चय हो सकता है कि आत्मा के संबंधी भी अलग हैं। अब प्रश्न ये उठता है वे संबंधी कौन-कौन हैं ? आत्मा के सभी संबंध केवल एक परमात्मा से हैं जो आत्मा का पिता है, माता है, शिक्षक-गुरु, सखा, बन्धु है। परमात्मा के ही साथ अनेक संबंध हो सकते हैं, मनुष्य के साथ नहीं। आत्मा अविनाशी है इसलिये उसके सर्व संबंध एक अविनाशी परमात्मा से ही हो सकते हैं।

परमात्मा का नर-नारी के समान कोई शरीर न होने से उसे हम पिता भी कह सकते हैं और माता भी कह सकते हैं। देह भेद न होने से ही वह शिव ज्योति-बिन्दु है।

जैसे शरीर के बच्चों का रूप शरीर के माता-पिता के समान होता है वैसे ही आत्मा का रूप परमात्मा के समान अर्थात् बिन्दु रूप है। यदि परमात्मा आत्मा का पिता है तो क्या उस पिता से हमें कोई बपौती अर्थात् वरसा मिलता है ? निश्चित रूप से मिलता है। जैसे– शरीर के पिता से बच्चे को वरसा मिलता है वैसे ही आत्मा के पिता से आत्मा को वरसा मिलता है। शिव बाबा कहते हैं "बच्चे, मैं तुम्हारे लिये बहिश्त की सौगात लेकर आया हूं अर्थात् २१ जन्मों के लिये अखण्ड सुख, शांति, संपन्नता और आरोग्य देने आया हूं।" तो आत्मा के पिता से शरीर के पिता के मुकाबले में कितना बड़ा वरसा मिलता है ! यह सोचने की बात है। ऐसा वरसा कौन नहीं लेना चाहेगा। इस वरसे की जब हमें याद आती है तो स्वाभाविक रूप से हमें परम-पिता परमात्मा की याद आने लगती है और उसके प्रति प्यार उमड़ आता है और आत्मा परमात्मा से इस संबध और प्राप्ति के आधार पर योग युक्त हो जाती है।

शिक्षकों में परम होने से परमात्मा हमारा परम-शिक्षक भी है। हम आत्माओं का वह शिक्षक है। शरीर का शिक्षक शरीरधारी होता है आत्मा का शिक्षक शरीरधारी नहीं हो सकता बल्कि आत्मिक ही होगा। वह शिक्षक है परमात्मा। उसका ज्ञान भी परम है यानि अलौकिक और अविनाशी। उस ज्ञान से प्राप्त होने वाला पद भी परम और उस पद से प्राप्त होने वाला हमारा जीवन स्तर और स्थिति भी परम होती है। इसीलिये परमात्मा ने यह अलौकिक विद्यालय—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की है जहाँ हम आत्मायें ईश्वरीय विद्यार्थी वनकर परम शिक्षक से ज्ञान प्राप्त करती हैं और अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाती हैं। तो क्यों न उस परम शिक्षक के प्रति हमें स्नेह और आकर्षण होगा !

जब कोई इंजिनियरिंग कालेज का या मेडिकल कालेज का अथवा लॉ कॉलेज का विद्यार्थी होता है तो उसे अपने ज्ञान का कितना नशा रहता है और अपने भविष्य के पद प्राप्ति का कितना नशा रहता है ! किन्तु इससे कई गुणा अधिक नशा तब चढ़ता है जब हम ईश्वरीय विद्यालय के ईश्वरीय विद्यार्थी वनकर परम शिक्षक से ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करके अविनाशी डिग्री अर्थात् देव पद की डिग्री प्राप्त करते हैं और अपनी जीवन स्थिति को कई गुणा ऊँचा उठाते हैं।

सत्य ज्ञान दाता, सद्गति दाता केवल परमात्मा ही हो सकता है जो परम सद्-गुरु है इसीलिये गायन है "पर ब्रह्म सद्गुरु जय जय" "पर ब्रह्म सद्गुरु" यह भक्ति मार्ग का गायन है। वह पर-ब्रह्म अर्थात् इन पंच तत्त्वों से पार ब्रह्मलोक के निवासी परमात्मा शिव हैं जिसके लिये यह संबोधन है। उसके सिवाय कोई भी देहधारी गुरु सद्गति और सत्य ज्ञान नहीं दे सकता। "सद्गुरु का निंदक ठौर न पाये" ऐसी कहावत है। इसीलिये परम सद्गुरु परमात्मा की ही याद और शरण हमारा बेड़ा पार कर सकती है।

इस ईश्वरीय विद्यालय का विद्यार्थी बनने के पूर्व ईश्वर के संबंध में मैंने अनेक बातें और अनेक मंतव्य पढ़े थे और सुने थे जिसने मुझे बहुत उलझन में डाल दिया था। अनेक प्रश्न उठा करते थे जिनका युक्ति-युक्त उत्तर नहीं मिलता था। व्यक्ति-व्यक्ति में ईश्वर के संबंध में मत भेद होने से ऐसा लगता था कि ईश्वर के बारे में निश्चित जानकारी किसी को नहीं। ईश्वर को नेती-नेती कहना भी यही प्रमाणित करता है कि किसी को ईश्वर की निश्चित जानकारी नहीं। प्रश्न उठता था कि जब ईश्वर का नाम है तो उसका अस्तित्व क्यों नहीं होगा ? कोई चीज अस्तित्व में होती है तभी तो उसका नाम होता है। इस प्रकार के तर्क मन में उठा करते थे। किन्तु अनुभव की कोई बात नहीं थी। वैज्ञानिक तो उसी बात पर विश्वास करते हैं जो प्रयोगों द्वारा सिद्ध कर पाते हैं। एक बार एक वैज्ञानिक को कहा

(शेष पृष्ठ १२ पर)

हन में बिरोजा व तारपीन फैक्ट्री में हुई "उद्योग योग प्रदर्शनी" के चित्रों को समझने के पश्चात् हां के महाप्रबन्धक सरदार गुरचरण सिह जी को ह्माकुमारी अनिता ईश्वरीय सौगात देते हुए ।

गांधी नगर (गुजरात) में "विश्व शान्ति प्रदर्शनी" का उद्घाटन भ्राता आर० बाल कृष्णन (सचिव) द्वारा सम्पन्न हुआ। चित्र में उनकी धर्म पत्नी, ब्र० क० कैलाश तथा अन्य बहन भाई साथ में हैं।

आबू पर्वत पर ओमशान्ति भवन के मंच पर कन्याओं का समूह। जिन्होंने यह दृढ़ संकल्प लिया कि वे शिव बाबा की श्रीमत पर चलते हुए आजीवन ईश्वरीय सेवा में तत्पर रहेंगी।

पहाड़गंज (नई दिल्ली) द्वारा आयोजित राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए दिल्ली नगर निगम के सदस्य भ्राता गोबिन्दराम वर्मा जी। साथ में ब्र० कु० शील, प्रेम प्रकाश जी, ओमप्रकाश जी तथा अन्य भाई बहन खडे हैं।

फ़र्रुखाबाद में आयोजित महिला गोष्ठी के अवसर पर (सामने-बाएं से दाएं) ब्र० कु० प्रभा, डा० सुशीला शर्मा, प्रधानाचार्य एन० ए० के० पी० कालेज एवं ब्र० कु० सुमन।

नारायणगढ़ (नेपाल) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्-घाटन नारायणगढ़ के सी० डी० ओ० भ्राता कृष्ण लाल पंत जी, भू० पू० मन्त्रीं भ्राता काशी राज जी, पुलिस अधिकारी तथा ब्र० कु० राज द्वारा सम्पन्न हुआ।

बड़ौदा में मानव एकता आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए बड़ौदा के महापौर डॉ वी० सी० पटेल। साथ में हैं ब्र० कु० चंपा तथा ब्र० कु० राज।

सचित्र समाचार

गोन्दिया में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर प्रवचन करती हुई ब्र० कु० मंजू बहन। उनके साथ विराजमान हैं सिविल सर्जन डा० मोहन जी, असिस्टेन्ट इन्जीनियर द० रेलवे भ्राता भास्करराव जी, ए० डी० एम० ओ० डॉ० चट्टोपाध्याय तथा उनकी धर्म पत्नी।

भरूच जिला सहकारी संघ द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन में ब्र० कु० सुनिला ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

नेरोबी (कीन्या) में राजयोगी भाई बहन 'जेसी ग्रुप' के साथ शान्ति यात्रा में सम्मिलित हुए। शान्ति यात्रा का एक दृश्य।

आत्मा परमात्मा का सम्बन्ध (पृष्ठ ६ का शेष)

गया कि यह सिद्ध करके बताइये कि परमात्मा नहीं है। तो उसने अपने तर्क और युक्तियों के आधार पर वैसा सिद्ध कर दिया और जब श्रोताओं ने उसकी बात मान ली तो उसने कहा "भगवान का शुक्रिया है कि मैं यह सिद्ध कर सका कि भगवान नहीं है।" कितनी विडम्बना है, कैसा अजीब तर्क है। यदि भगवान नहीं तो शुक्रिया किसका? यह तो मान न मान मैं तेरा मेहमान वाला किस्सा हो गया। शायद भगवान भी यही कहता है "मान न मान मैं तेरा भगवान।" कहने का मतलब यह कि मनुष्य तो अल्पज्ञ होते हुए भी सर्वज्ञ होने का दावा करता है और इस अहंकार में विचित्र मन्तव्य और विचित्र विचार प्रकट करता है। ऐसे मन्तव्य और विचार सुनकर मैं भ्रमित हो जाया करता था और समझ में नहीं आता था क्या मानें और क्या न मानें। कभी-कभी ऐसा लगता था कि शायद ईश्वर ही विचित्र है किन्तु अब उस विचित्र का वास्तविक चित्र जानकर मुझे अकाट्य उत्तर मिल गया। विचित्र विचार और विचित्र तर्क समाप्त हो गया।

: :

शान्ति-सन्देश

ब्र० कु० आनन्द, मुलुन्द

उमड़ चली शान्ति की सरिता भूमण्डल पर आज,
शान्ति भवन में सज गये विश्व शान्ति के साज।
ओम शान्ति भवन प्यारा शान्ति भवन.....
शिव सन्देश सुनाये,
दुःखी अशान्त हुए मानव को सच्चा पथ दिखलाये।

ओमशान्ति का अर्थ जानकर शिव से स्नेह जुटा लो तुम,
राजयोग की अनुपम विधि से पुनः देव पद पा लो तुम।
सृष्टि चक्र के आदि अन्त का सबको राज़ सुनाये,
दुःखी अशान्त हुए मानव को शान्ति पथ दिखलाये।

न हिन्दू न मुसलमान तुम,
शिव पिता की सन्तान हो तुम।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई,
आत्मा रूप में भाई-भाई।

भाई चारे का नाता जुड़ाकर प्रेम की धारा बहाये,
दुःखी अशान्त हुए मानव को शान्ति पथ दिखलाये।

देह नहीं हो देही हो तुम पवित्र बनो राजयोगी बनो तुम,
शान्ति है स्वधर्म तुम्हारा, शान्त स्वरूप बनो तुम।
जन्म-जन्म की प्रभु मिलन की सबकी प्यास बुझाये,
दुःखी अशान्त हुए मानव को शान्ति पथ दिखलाये॥

जब चन्द्रग्रहण ने दो राजाओं को संन्यास दिला दिया !

ले० : ब्रह्माकुमारी चक्रधारी
शक्तिनगर, दिल्ली।

यह द्वापर युग का वृतान्त है। कहते हैं कि गान्धार का राजा अपने राजमहल की छत पर बैठा हुआ अपने मंत्रियों से कुछ परामर्श कर रहा था। प्रारम्भ में चांदनी की छटा छटक रही थी, परन्तु धीरे-धीरे चांदनी कम होती गई और कुछ समय के बाद एका-एक ऐसा प्रतीत हुआ जैसे चांद छिप गया है, राजा का ध्यान इस ओर गया। तब एक मंत्री तुरन्त बोल उठा—"महाराज आज चन्द्र ग्रहण है। राहू ने चंद्रमा को ग्रसित कर लिया है।"

यह सुनते ही राजा के मन पर एक धक्का-सा लगा। उसने सोचा कि, "चन्द्रमा भी तो नभमण्डल का राजा है। जैसे उसको ग्रहण लग गया है, एक दिन मुझे भी काल का ग्रहण लग जाएगा, मैं अपने मण्डल का राजा हूं तो क्या हुआ।" इस प्रकार जगत् की नश्वरता और सत्ता तथा स्वामित्व की अस्थिरता को महसूस करते हुए राजा के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और दूसरे ही दिन राजा राजमहल को छोड़-कर जंगल में साधना करने के लिए निकल पड़ा।

राजा की वैराग्य-कथा और राज-सन्यास का समाचार दूसरे राजाओं तक भी पहुंचा। विदेह देश के राजा ने जब यह वृत्तान्त सुना तो उनके अपने मन में भी वैराग्य उत्पन्न हो गया। विदेह देश के राजा गान्धार के राजा से व्यक्तिगत रूप से कभी सम्मुख मिले तो नहीं थे, परन्तु दूतों द्वारा दोनों में परस्पर मैत्री बढ़ती गई थी। अब उन्हें भी ऐसा लगा कि ये राज-काज चार दिनों की चांदनी है, मनुष्य की कुछ शाश्वत के लिए साधना करनी चाहिए। अतः अपने मित्र राजा का समाचार पाकर वे भी साधक बन कर जंगल की ओर बढ़ गए।

दोनों राजा अपने-अपने तौर पर साधना करते रहे और वन-विहार तथा भ्रमण करते रहे। अनायास एक दिन भ्रमण करते-करते वे एक दूसरे को मिल गए, दोनों एक दूसरे को पहचानते तो थे नहीं, दोनों ने एक दूसरे के बारे में पूछने की कोशिश भी नहीं की बल्कि वे अध्यात्म ही की चर्चा किया करते।

एक सायं को वे कर्मगति पर चर्चा में विलीन थे कि रात्रि हो गई और आकाश में चांद अपनी रुपहेली चांदनी से झिलमिल फहलाने लगा। अचानक ही दोनों ने देखा कि चांद को ग्रहण लगा है। गान्धार देश के राजा को पूर्व-वृत्तान्त याद आ गया। सहसा उसके मुख से निकला, "यह चन्द्र ग्रहण ही मेरे राज-त्याग के लिए निमित्त बना था।"

यह सुनते ही विदेह के राजा ने कहा—"तब क्या आप ही गान्धार देश के राजा थे।"

गान्धार के महाराज बोले –"जी हां। परन्तु आप भी अपना परिचय दो, आपने वन की ओर मुंह किया कुछ तो वृत्तान्त आपके जीवन में भी ऐसे घटे होंगे ?"

विदेह के राजा ने हंसते हुए कहा—"यह बात है, अब पता चला। मैं पहले विदेह-नरेश था। परन्तु जब आपके राज-त्याग का समाचार सुना तो अपना भी मन उठ गया। आपसे मित्रता और स्नेह तो था ही।"

फिर बात को चालू करते हुए वे कहने लगे, "हम कर्मगति की चर्चा कर रहे थे। देखो, दोनों का मित्र-भाव और विचार-साम्य दोनों को इकट्ठा करने में निमित्त बना है।"

खैर, यह प्रसंग भी समाप्त हुआ। परिभ्रमण करते हुए वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां के अधिकतर लोग नमक का प्रयोग या तो नहीं करते थे या

बिल्कुल ही कम करते थे। अतः दोनों जो भिक्षा लेते, उस भोजन में भी नमक नहीं होता था। विदेह के राजा अपने राज-निवास में तो खूब स्वादिष्ट और मन चाहा भोजन किया करते थे। अब रोज़ ही उन्हें अलोना भोजन मिलने लगा तो वे थोड़ा डगमगा गए।

अनायास, एक दिन एक सेठ नमक दान करने चले आए। उन्होंने विदेह के राजा को नमक दिया तो राजा ने गठरी भर कर रख ली। अब यदि भोजन अलोना भी मिला तो भी कोई कमी नहीं रहेगी, वे जानते थे कि भिक्षु के लिए संग्रह करना वर्जित है परन्तु स्वाद के वश उन्होंने अपना नियम तोड़ दिया।

एक दिन जब दोनों भोजन करने बैठे तो विदेह के राजा भिक्षु ने नमक की गठरी निकाली और अपने भोजन में नमक डाल दिया। गान्धार देश के राजा को यह अच्छा नहीं लगा कि इसने भिक्षु-व्रत को तोड़ दिया हैं। उसने तनिक क्षुब्ध हो कर रूखे स्वर से कहा, "आपने नमक की गठरी बांध रखी है, यह जानते हुए कि यह भिक्षुचर्या के विरुद्ध हैं, तब भी आपने संग्रह-वृति को अपनाया है।

विदेह के राजा-भिक्षु बोले –"हर दिन मुझसे आलोना भोजन नहीं खाया जाता। यह नमक ही तो है, मैंने कोई रत्न-हीरों का संग्रह थोड़े ही किया है?"

गान्धार देश के राजा-भिक्षु बोले, "एक तो आप व्रत तोड़ते हैं और इस पर अपनी भूल भी नहीं मानते! आप प्रायश्चित करने की बजाय आग्रह करते हैं। यदि पेट ही प्यारा था तो राज-भाग छोड़ने की क्या जरूरत थी? आप तो जबान के गुलाम हैं! यह कैसी साधना है।

विदेह के राजा भिक्षु ने कहा, "आप मुझे ज़बान का गुलाम बताते हैं और मेरी साधना को गलत मानते हैं। आपका यह क्या व्यवहार है! आप मुझसे इस तरह की बातें क्यों करते हो? नमक की गठरी रख लेने से क्या कभी व्रत टूटता है? आप जिस तरह बोल रहे हैं, इससे क्या आपकी साधना ठीक होती है? यदि आपने दूसरों पर हकूमत करनी थी तो आपको भी राज छोड़ने की क्या जरूरत थी?

गान्धार देश के राजा-भिक्षु के मन को यह बात लग गई। उन्होंने अपने अक्रोश को थमाया और बोले –"आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। मैंने फिर वही रोब से बोलना शुरू कर दिया था। आपको दुःख दिया—इसके लिए मैं क्षमा याचना करता हूं। आप क्षमावान हैं, कृपया क्षमा कीजिए।"

अब ऐसे प्रायश्चित-भरे और नम्रतापूर्ण शब्द सुनकर विदेह के राजा भी अपने में अपनी भूल को समझने लगे। वे बोले –"आप तो महान हैं। आपकी साधना अच्छी है। आप जल्दी सम्भल गये। आप से मुझे अच्छी प्रेरणा मिली है। वास्तव में नमक की गठरी भर कर रखना भिक्षुचर्या के विरुद्ध है। आपने मेरे ही भले के लिए मुझे कहा था। अब आप मुझे क्षमा करें।"

अब दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति मित्र-भाव और स्नेह उभर आया। दोनों अपनी-अपनी भूल मानते हुए, दूसरे से क्षमा मांगते हुए स्नेहस्निग्ध हो गए।

बच्चों, इस कहानी से हम कई शिक्षाएं ले सकते हैं। एक तो यह कि मनुष्य किसी भी घटना से प्रेरणा लेकर उसे अपने जीवन में परिवर्तन के लिए प्रयोग कर सकता है, जैसे कि गान्धार के राजा ने चन्द्रग्रहण देख कर संसार की नश्वरता को समझा। दूसरे, यह कि स्वाद या रोष इत्यादि के संस्कार सूक्ष्म रूप से मनुष्य को ग्रसित कर लेते हैं। इन पर भी विजय प्राप्त करनी चाहिए। यद्यपि राजयोग मार्ग में वन में जा रहने या अलोना खाने का कोई नियम नहीं है परन्तु मनुष्य को प्रकृति के वशीभूत नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, यदि हमारी कोई निन्दा करते हुए भी हमारी भूल बताता है तो हमें निन्दा की ओर ध्यान न देकर अपनी भूल सुधारने पर ध्यान देना चाहिए, हमारा मार्ग तो प्रवृत्ति मार्ग है, भिक्षुओं की तरह निवृति मार्ग नहीं है, अर्थात् घर-बार या नमक छोड़ने का मार्ग नहीं है, परन्तु आसक्ति तो हमें छुड़ानी ही है।

□

सत्यता

☐ ब्र० कु० सूरज कुमार, माउण्ट आबू

पात्र—

महामण्डलेश्वर—श्री श्री १०८ स्वामी रामानन्द जी, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य

चार उनके शिष्य—स्वामी रामदास, स्वामी गरीब दास, स्वामी परमानन्द स्वामी हरिहरानन्द

ब्रह्माकुमारी ज्योति– ब्रह्माकुमारी आश्रम की संचालिका

आत्मानन्द— एक ब्रह्माकुमार

"प्रथम दृश्य"

दक्षिण भारत का एक नगर, स्वामी रामानन्द जी का आश्रम। समय प्रातः ७ बजे। बाहर से मंदिर में घण्टे बजने व आरती होने की आवाज़ आ रही है। स्वामी रामानन्द अपने निजी कक्ष में बैठे हैं। उनकी स्टेज ऊंची है। उनके तख्त पर लाल चादर का आसन है। नीचे चारों शिष्य बैठे हैं। सभी के चेहरों पर शान्ति व गम्भीरता के मिश्रित चिह्न दिखाई दे रहे हैं।

स्वामी रामानन्द– आज आप सभी किस सोच में बैठे हैं? आपके चेहरों पर आज गहन शान्ति है।

रामदास– महाराज, न जाने क्यों आज मन शान्ति के प्रवाह में खिचा जा रहा है। जैसे कि किसी सुखद घटना के असार हैं।

स्वामी रामानन्द—हां, आज सवेरे २ बजे ही मेरी भी आंखें खुल गईं। समाधि में मन कुछ दिव्य-सा अनुभव करता रहा।

परमानन्द—कल जो विद्वान आये थे वे कह रहे थे, "कि मैं ब्रह्माकुमारियों के आश्रम में गया था, वहां बड़ी ही दिव्यता व शान्ति थी।" कहते थे—"ये ब्रह्मा-कुमारियां तूफान की तरह आगे बढ़ रही हैं। इनका प्रभाव समाज पर छाता चला जा रहा है। यद्यपि ये शास्त्रों को नहीं मानती तो भी इनमें अलौकिक आकर्षण है"—ये बातें मेरे मन में घूम रही हैं और मन भी शान्त है।

गरीब दास—स्वामी जी ये नारी शक्ति का प्रभाव तो कब से है?

रामानन्द—बेटा इन्हें तो ४६ वर्ष हो गये। इनका वेग बढ़ता आ रहा है। कोई कहते हैं इनके पास जादू है, ये सबको वश में कर लेती हैं।

हरिहरानन्द—महाराज नारी तो स्वयं ही जादू है। बड़े-बड़े ऋषियों को इन्होंने वश में कर लिया था। फिर अब तो कलि का प्रभाव है।

स्वामी रामानन्द—ना बेटा, बात कुछ और लगती है। जो लोग इनके पास गये हैं, वे ऐसा नहीं कहते। यद्यपि वे वेदों को नहीं मानती तो भी इनका विरोध करने का साहस मुझे नहीं हो रहा है। आज सवेरे समाधि में ही मुझे सूक्ष्म आवाज़ आ रही थी कि इनकी सत्यता को जानो।

रामदास—महाराज, इनके बारे में अखबारों में कई उल्टे लेख छपते हैं।

रामानन्द—बेटा, अखबार वालों पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

रामदास—तो स्वामी जी, आपकी क्या राय है?

स्वामी रामानन्द - मेरा मन निर्णय नहीं कर पा रहा है। कभी विचार चलते हैं कि ये शास्त्रों को नहीं मानतीं, इससे नास्तिकता को बढ़ावा मिलेगा, धीरे-धीरे सभ्यता नष्ट हो जाएगी—कुछ करना चाहिए।

परमानन्द—तो क्या रजनीश की तरह, इनसे भी वही व्यवहार किया जाए।

रामानन्द—बेटा, रजनीश ने तो काम वृत्ति को बढ़ावा दिया। परन्तु ये तो ब्रह्मचर्य को बढ़ावा दे रही हैं। जो काम हम नहीं कर सके। हमने त्याग किया, संन्यास किया, परन्तु हम समाज में पवित्रता का बीज नहीं बो सके। इसलिए इनका विरोध करने का साहस नहीं होता।

हरिहरानन्द—परन्तु क्या आप समझते हैं कि इनके जीवन में ब्रह्मचर्य होगा। ये तो नाचती हैं, सुरमा डालती हैं। जबकि हम संन्यासी ही ब्रह्मचर्य को भारी तपस्या अनुभव करते हैं तो इन रमणियों के लिए क्या ये सम्भव होगा।

रामानन्द—बेटा, ब्रह्मचर्य का उपदेश वही दे सकता है जो इसका पालन करता हो। एक विकारी मनुष्य के मुख से तो ब्रह्मचर्य शब्द भी नहीं निकलेगा। मैं सोच रहा था इस तथ्य पर भी, कि अगर वहां पवित्रता न होती तो ये ब्रह्माकुमारियां भी नष्ट हो गई होतीं।

परन्तु इनका प्रभाव तो प्रतिदिन बढ़ रहा है। नाच तो मीरा भी करती थी, गोपियां भी करती थी, परन्तु वे कितनी पवित्र थीं।

रामदास—(हंसते हुए)—लगता है आप पर भी उनका जादू है···(सभी हंसते हैं)—परन्तु हंसी में भी गम्भीरता है। जो हंसी अगले ही क्षण समाप्त हो जाती है।

रामानन्द—बेटा, आज समाधि में मैंने देखा कि इनका प्रभाव प्रातः के सूर्य के प्रकाश की तरह बढ़ता जा रहा है। ये आवाज़ मेरे कानों में गूंज रही है—"रामानन्द, इनकी सत्यता को जानो"—न जाने यह किसकी दिव्य प्रेरणा है।

परमानन्द—तो महाराज, आप आज्ञा दें, या तो उन्हें यहां बुलायें या हम उनके आश्रम में चलें।

रामानन्द—आप और हरिहरानन्द, दोनों प्रकाण्ड विद्वान भी हो और बहुत समझदार भी। तुम तांत्रिक विद्या भी जानते हो और ज्योतिष विद्या भी। तुम दोनों वहां जाओ और ये कौन हैं, ये क्या चाहती हैं, इनमें वेदों को न मानने का साहस कहां से आया, इनके पवित्रता व योग का क्या स्वरूप है, आदि-आदि बातों की जानकारी लाओ।

रामदास—(विनोदी रूप में)—परन्तु देखना उनका जादू आप पर भी न लग जाए···और लाल प्रकाश में नहीं बैठना।

रामानन्द—(समझाते हुए)—मैं इन्हें इसीलिए भेज रहा हूं, कि ये तांत्रिक भी हैं और कोई भी जादू-वादू इन पर असर नहीं करेगा। और ये ज्योतिष विद्या में भी पारंगत है, उनके चेहरे देखकर भी ये बहुत कुछ जान जायेंगे।

रामदास—ठीक है, परन्तु आपको जो आवाज आई है कि इनकी सत्यता को जानो, इसका यह भी तो आशय हो सकता है कि इनके ढोंग को जानकर आप इनका पर्दाफाश करें और इन्हें अधर्म के अपवित्र मार्ग से हटाएं।

रामानन्द—यह तो देखने पर ही निर्णय होगा। हां, अगर तुम भी चाहो तो जा सकते हो।

रामदास—हां, मेरा भी जाने का विचार है।

"द्वितीय दृश्य"

ब्रह्माकुमारी आश्रम, समय प्रातः ९ बजे। शान्त वातावरण। आत्मानन्द कुर्सी पर बैठा कुछ पढ़ रहा है। रामदास, परमानन्द, व हरिहरानन्द, तीनों आश्रम के द्वार से प्रवेश करते हैं। तीनों के वस्त्र गेरुवे, गले में मालाएं, मस्तक में सफेद तिलक लगे हैं।

आत्मानन्द—(तीनों को देखकर)—आइए स्वामी जी आइए, आप स्वामी रामानन्द के आश्रम से आये हैं?

परमानन्द—हां, आपने देखा है?

आत्मानन्द—हां, मैं कई बार बड़े स्वामी जी को निमन्त्रण देने गया हूं आइए, आपका स्वागत है। बैठिये, मैं पानी लाता हूं···

परमानन्द—हम आपकी बहन जी से मिलना चाहेंगे।

आत्मानन्द—अवश्य···मैं उन्हें सन्देश देता हूं।

(आत्मानन्द का अन्दर जाना)

हरिहरानन्द—बड़ा शान्त वातावरण है। यही वातावरण तपस्या का है। जैसे कि शान्ति की तरंगें फैल रही हैं।

रामदास—(हरिहरानन्द को)—लगता है तुम पर बिना खाये पिये ही असर होने लगा···

हरिहरानन्द—(कुछ चिड़ेपन से)—अरे भई, सत्यता से तो आंखें नहीं मूंद सकते, क्या तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा है?

आत्मानन्द का पानी लेकर आना। सभी पानी पीते हैं।

आत्मानंद—बहन जी १५ मिनट में आती हैं। हमारे यहां आज अखण्ड योगाभ्यास का कार्यक्रम चल रहा है।

परमानंद—तभी इतनी शान्ति है। बेटा तुम्हारा परिचय?

आत्मानंद—स्वामी जी, ३ वर्ष से यहां ज्ञान-योग सीखने आता हूं। वैसे मैं एम० ए० (दर्शन शास्त्र) का विद्यार्थी हूं। मेरा नाम आत्मानन्द है।

परमानंद—बहुत खूब। नाम भी सुन्दर, काम भी सुन्दर। परन्तु तुम यह तो बताओ, तुम यहां कैसे फंस गये?

आत्मानंद—(विनोदी मुद्रा में)—मैं···मैं यहां फंसा हूं, आप सभी को जंगलों के चक्कर से छुड़ाने के लिए।

सभी हंसते हैं···

हरिहर नन्द—अच्छा जो यहां देवी हैं उनकी कुछ योग्यता?

आत्मानंद—ये ज्योति बहन हैं। सबकी आत्म ज्योति जगा रही हैं, एम०ए० (विज्ञान) हैं। बाल ब्रह्मचारिणी

हैं। दस वर्ष से योग-अभ्यास किया है और ८ वर्ष पूर्व अपने जीवन को प्रभु-अर्पण कर दिया था। बहुत योगी आत्मा है।

परमानंद—इतनी योग्य हैं, फिर तो अवश्य दर्शन करेंगे। आप उन्हें बुलाओ।

(आत्मानन्द का प्रस्थान)

हरिहरानंद—भई, सोच समझकर प्रश्न करने होंगे।

परमानंद—और सुनो रामदास, भई कृपया तुम चुप रहना। इज्जत का भी तो प्रश्न है।

रामदास—ठीक है, मैं नहीं बोलूंगा। परन्तु आप इतने डर क्यों गये। आत्मानन्द व ज्योति का प्रवेश ·· ज्योति के चेहरे पर दिव्यता है। देखने में देवी लगती है। मध्यम कद, श्वेत वस्त्र, मानो साक्षात् सरस्वती हो।

परमानंद—आइए देवी, बैठिये।

ज्योति—आज तीन मूर्तियों का कैसे आना हुआ। हमने तो बड़े स्वामी जी को कई बार बुलाया है। परंतु···

परमानंद—हां, आज सवेरे २ बजे से ही उन्हें आपके बारे में कुछ दिव्य प्रेरणाएं आ रही थीं। उन्होंने ही हमें भेजा है।

ज्योति—हां, आज हमने आश्रम पर २ बजे से योगाभ्यास रक्खा था और सूक्ष्म रूप से स्वामी जी को दिव्य सन्देश भेजे थे।

परमानंद- तो शायद उन्हीं प्रेरणाओं से उन्हें दिव्य अनुभव हुए।

हरिहरानंद—तो आपने योग में इतनी पराकाष्ठा प्राप्त कर ली है?

ज्योति - यह तो उस परम सत्ता का वरदान है···

यह सुनकर तीनों अन्तर्मुखी हो गये। चारों ओर सन्नाटा छाने लगा। कुछ क्षण बाद···

परमानंद—देवी, हमने आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है, परन्तु आप जैसी दिव्य विभूतियों को पवित्र वेदों को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। हमें रंज होता है जब हम यह सुनते हैं कि आप वेदों को भी नहीं मानती।

ज्योति—आपकी उदारता के हम आभारी हैं। परन्तु महात्मन् जिसको खोजने के लिए वेद-शास्त्र अध्ययन किया जाता है, अगर वह स्वयं ही परम शिक्षक बन कर मिल जाए तो बताओ क्या फिर वेदों की आवश्यकता रहेगी?

हरिहरानंद—मतलब क्या, ज्ञान-दाता परमात्मा···

ज्योति—हां, वही जिसे ज्ञान-सागर, दिव्य बुद्धि का दाता कहते हैं···

परमानंद—तो क्या?

ज्योति—हां, तो यही कि ये ईश्वरीय ज्ञान वेदों का नहीं, पर ज्ञान सागर परम शिक्षक ने दिया है।

परमानंद—परन्तु वेदों का ज्ञान भी तो ईश्वर द्वारा ही दिया गया है—

ज्योति—परन्तु अब उसका मूल स्वरूप, उसके विस्तार में छुप गया है। अतः अब पुनः निराकार परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा सम्पूर्ण ज्ञान दिया है व राज योग सिखाया है—जिससे मनुष्य सहज ही अपने जीवन को पवित्र बना सकता है।

रामदास—तो उसने ज्ञान आपको ही दिया, देना तो हमें चाहिए था, हमें उसकी खोज थी···।

परमानन्द—(रामदास से) चुप रहो भई, सुनने दो।

ज्योति—वेद पढ़कर भी आपकी खोज समाप्त नहीं हुई, आपका मन सम्पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं हुआ, इसका अर्थ···?

इसका अर्थ यही है कि सम्पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण परमात्मा ही दे सकते हैं, पुस्तकें नहीं। और परमात्मा सभी को ज्ञान दे रहे हैं। आप भी उस ज्ञान के अधिकारी हैं।

रामदास—परन्तु पहले हमें देना चाहिए था। हम ज्ञान को जल्दी समझ पाते।

ज्योति—परन्तु क्या आप उसे स्वीकार करते या यही कहते कि वेदों में जो लिखा है, वही सत्य है?

राम-दास—क्यों नहीं

ज्योति—तो अब आप स्वीकार करो।

परमानन्द—परन्तु भगवान स्वयं आपको ज्ञान देते हैं, इसका प्रमाण?

ज्योति—हमने स्वयं ज्ञान-सागर को छलकते देखा। इन कानों से उनके मधुर, अतीन्द्रिय सुख देने वाले महावाक्य सुने। इस ज्ञान से अनेकों का जीवन पवित्र बन गया। यही सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है।

राम-दास—तो क्या आपने भगवान को देखा है?

ज्योति—देखना तो यहां साधारण सी बात है—जबकि वह स्वयं ही पढ़ाने आते हैं।

रामदास—(आश्चर्य से)—साधारण सी बात! हम

समाधि लगा-२ हार गये, परन्तु···

ज्योति—समाधि की आवश्यकता ही नहीं। वह खुद अपने बच्चों से मिलने आया है। वह तो हमारा बाप है···मिलना तो छोड़ो, हम तो उनसे बातें करते हैं। हमने उनका अलौकिक प्यार देखा है। गोपियों से कोई पूछे कि तुमने भगवान देखा है···तो कैसा लगेगा।

राम-दास—असम्भव सी बात है।

हरिहरानन्द— देवी, पूछने की आवश्यकता तो नहीं रही। आपका दिव्य तेज आपकी पवित्रता का ज्वलन्त प्रमाण है। परन्तु फिर भी पूछता हूं—आप कहते हैं कि आप ब्रह्मचर्य सिखाती हैं, यह कहाँ तक सत्य है ?

ज्योति—यह ईश्वरीय कार्य है। परमात्मा सम्पूर्ण सृष्टि को पावन बनाने आये हैं। उन्होंने स्वयं पवित्र बनने का सरल मार्ग दर्शाया है। जो उनके बच्चे बनते हैं, उन्हें यह 'पवित्र भव' का वरदान मिल जाता है।

हरिहरानन्द—परन्तु लोग आपकी पवित्रता में संशय क्यों करते हैं ?

ज्योति—जिन्हें संशय हो, वे आकर देख लें। कुदृष्टि वाले पतित लोग भला दूसरों की पवित्रता में कहां विश्वास करेगें। यही तो धर्मग्लानि है।

हरिहरानन्द—सत्य है देवी, आपका पवित्रता का वातावरण छुप नहीं सकता और इस शक्ति के कारण ही आपका प्रभाव समस्त विश्व पर छा रहा है।

ज्योति—यह तो ईश्वरीय शक्ति है, और एक दिन सभी को इसके आगे झुकना ही पड़ेगा।

राम-दास—लगता तो ऐसा ही है।

परमानन्द—कुछ अन्य प्रश्नों का समाधान आप करें ?

ज्योति—अवश्य···

परमानन्द—आप यह मानते हैं कि सृष्टि चक्र हर ५००० वर्ष बाद पुनरावृत्त होता है। यह कैसे ?

ज्योति—स्वामी जी आपने एक बात देखी होगी—"मन में हजारों वर्ष से संकल्पों का प्रवाह चला आ रहा है"—इसका कारण ?

परमानन्द—कारण क्या, मन में तो विचार उठते ही हैं।

ज्योति— नहीं, इसका कारण है। वह गुह्य ज्ञान केवल परमात्मा ने ही दिया कि हर आत्मा में उसके सम्पूर्ण जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। उस आधार पर ही मन में संकल्पों का सतत प्रवाह चल रहा है।

परमानन्द—विचार मग्न···।

ज्योति—जिसे लोग कहते आये—"भाग्य बना-बनाया है"। तो अनादि काल से ही आत्मा में पूरा पार्ट भरा हुआ है, वह खेल खेल रही है। और निश्चित पार्ट का अर्थ ही है—"पुनरावृत्ति"···

परमानन्द—आश्चर्य, अति गहन दर्शन···इसे ही मनोविज्ञान में माना है कि मन की अर्ध चेतन स्थिति में संकल्पों का संग्रह है।

ज्योति— हां, परमात्मा ने ही यह गहन दर्शन दिया है···।

रामदास—(हंसी में) परन्तु आपने पूरे सृष्टि चक्र को ही ५००० वर्ष में बांध दिया ?

ज्योति—हमने नहीं, त्रिकालदर्शी परमात्मा ने।

(पुनः सन्नाटा)

हरिहरानन्द—देवी, आप यह बताएं कि मनुष्यात्मा पशु योनि में जन्म क्यों नहीं लेती ?

ज्योति—आप इस विराट सृष्टि नाटक में एक विचित्रता देखते होंगें कि जितने यहाँ मनुष्य हैं, उतने ही विभिन्न चेहरे, आकृति व प्रकृति है। एक भी मनुष्य की आकृति दूसरे से नहीं मिलती।

हरिहरानन्द—(गम्भीर मुस्कान के साथ)—हाँ, है तो सही···

ज्योति—ऐसा क्यों है ?

हरिहरानन्द—भगवान की लीला है देवी···

ज्योति—यह बात स्पष्ट करती है कि सभी शरीरों में भिन्न-२ आत्माएँ हैं। जैसे-जैसे आत्मा के संस्कार हैं, वैसा-वैसा ही शरीर है।

हरिहरानन्द—हाँ क्रोधी मनुष्य का चेहरा अलग, शान्त मनुष्य का चेहरा अलग होता है। यह तो सत्य है।

ज्योति—और इससे भी पूर्व—जब ५ मास के बाद गर्भ में आत्मा प्रवेश करती है, उसके बाद ही शरीर के मुख्य अंगों का व आकृति का विकास होता है।

हरिहरानन्द—ठीक है, मुझे ज्योतिष का ज्ञान है। मैं सहमत हूं।

ज्योति—तो अगर मनुष्यात्मा पशु योनी में चली जाए तो पशु शरीर की आकृति मनुष्य जैसी हो जाए तो मनुष्य की आकृति पशु जैसी हो जाए। अर्थात मनुष्यात्मा से पशु शरीर का व पशुआत्मा से मनुष्य शरीर का विकास नहीं हो सकता।

हरिहरानंद—बहुत सुन्दर तर्क। जरूर आपको यह ज्ञान किसी अलौकिक सत्ता से ही मिला है। नहीं तो वेदों को न मानने का साहस किसी में कहाँ।

ज्योति—हाँ परमात्मा ने हमें सभी गहनतम् रहस्य स्पष्ट कर दिये हैं। जिनका शास्त्रों में जिक्र भी नहीं है। आप कभी समय दें तो हम विस्तार से चर्चा करें।

परमानंद—हमें यहाँ आकर खुशी हुई और हमने आपकी सम्पूर्ण सत्यता को, आपके मस्तक से, आपकी दिव्य वाणी से जान लिया। आप निसन्देह महान हैं और विश्व को एक नया मोड़ देंगी।

ज्योति—हमें भी आपसे मिलकर हर्ष हुआ। आप बड़े स्वामी जी को भी एक बार अवश्य लाना।

रामदास—(उठते हुए) और सबसे ज्यादा खुशी मुझे हुई।

धन्यवाद

तीनों का प्रस्थान

(पृष्ठ २० का शेष)

—आत्मिक-बल

के द्वारा बल की प्राप्ति भी तभी होती है, जबकि वह सेवा "निस्वार्थ भाव" से की गई हो। निस्वार्थ भाव से की गई सेवा ही बल एवं खुशी प्रदान करती है। सेवा में यदि स्वार्थ का या पोजीशन का भाव है, तो वह आत्मा को बल प्रदान करने के बजाय और ही निर्बल बनाती है।

(९) **आत्म-विश्वास का बल**—आत्म-विश्वास हमें बहुत बल प्रदान करता है। यदि हमारे अन्दर आत्म-विश्वास है, तो हम किसी भी प्रकार की समस्याओं से घबरायेंगे नहीं। आत्मविश्वास हर प्रकार की समस्याएं एवं परिस्थितियों का सामना करने का बल प्रदान करता है। आत्म-विश्वास का बल भी तभी हमारे अन्दर आ सकता है, जब हम अपने आत्म-स्वरूप में स्थित होकर यह निश्चय करेंगे कि आत्मा शक्ति स्वरूप है।

(१०) **ब्रह्मचर्य का बल**—सबसे महत्वपूर्ण बल है —"ब्रह्मचर्य का बल"। सभी बलों की आधारशिला है, ब्रह्मचर्य का बल। ब्रह्मचारी वह है, जिसकी बुद्धि सदैव ब्रह्मलोक में विचरण करती रहे। बुद्धि ब्रह्म-लोक में होगी, तो दैहिक संकल्प-विकल्प नहीं चलेंगे। ब्रह्मचर्य के बल के बगैर हम अशरीरी नहीं हो सकते एवं ईश्वरीय सेवा नहीं कर सकते। इस-लिये हमारे अन्दर, ब्रह्मचर्य का बल होना आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का बल होगा तो अन्य सभी बल हमारे अन्दर आ जायेंगे।

यदि उपरोक्त बल हमारे पास होंगे, तो माया (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) निर्बल हो जायेगी और हम माया एवं अन्य सभी प्रकार की परिस्थितियों का आसानी से सामना कर सकेंगे। साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि हमारे अन्दर उपरोक्त सभी बल हों, नहीं तो अन्य बलों पर भी प्रभाव (Effect) पड़ता है। अन्त में हम यही कहेंगे कि हमें उपरोक्त सभी बलों को अपने अन्दर धारण करने के लिये प्रयत्नशील होना चाहिये।

□

शिव भगवानुवाच

मीठे बच्चे—सत का संग और स्वचिन्तन यही स्व कल्याण और विश्व कल्याण का साधन है। इसलिए व्यर्थ संग और व्यर्थ चिन्तन से सदा दूर रहो। व्यर्थ बात सुनना, व्यर्थ बात बोलना, व्यर्थ देखना यह सब व्यर्थ का संग है।

२. मीठे बच्चे—सदा खुश रहना और खुशी का दान देना यही आपका असली काम है। खुश रहो और सन्तुष्ट रहो, सबको खुशी का दान देते रहो।

आत्मिक-बल

ब्र० कु० राजेन्द्र कुमार (उज्जैन)

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक सदैव ही मानव जीवन में आन्तरिक एवं वाह्य दोनों ही प्रकार के वल का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। समस्याएं अथवा परिस्थितियाँ, स्थूल हो चाहे सूक्ष्म, उनमें वल की उपयोगिता से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। वल मानव को समस्याओं से जूझने की क्षमता प्रदान करते हैं। ज्ञान मार्ग में आजाने के पश्चात् माया (विकारों-बुराइयों) का सामना करने के लिये भी आत्मिक वल की आवश्यकता होती है। वल भी विशेष रूप से कौन-कौन से हैं एवं उनकी धारणा के लिये क्या उपाय हैं, उनका प्रस्तुत लेख में हम विवेचन करेंगे।

"आत्मिक वल" मुख्य रूप से निम्न प्रकार के हैं :—

(१) **ज्ञान बल**—इस आध्यात्मिक क्षेत्र में आने के पश्चात् हमें सबसे पहले ज्ञान मिलता है और इसी ज्ञान के द्वारा हम आगे वढ़ते हैं। "जो भी ज्ञान शिव वावा ने हमें दिया है, उसका यथार्थ मंथन ही हमें वल प्रदान करता है" और इसी ज्ञान वल के आधार पर हम सुगमता से आगे वढ़ सकते हैं। ज्ञान वल वीज है, जिससे कि अन्य सभी वलों की उत्पत्ति होती है।

(२) **योग बल**—योग वल एक वहुत ही महत्वपूर्ण वल है। योग वल से ही नई सतयुगी सृष्टि (राजाई) की स्थापना हो रही है। योग अर्थात स्वयं को आत्मा समझकर, उस सर्व-शक्तिमान परमपिता परमात्मा से आत्मा का सम्वन्ध जोड़ना, यही वास्तव में योग है और इसी के द्वारा आत्मा जो विकारों के कारण वलहीन हो गई है, उसमें आत्मवल आता है। अर्थात् आत्मा में बुराइयों से युद्ध करने का वल आता है। योग वल द्वारा होने वाले परिवर्तन स्थाई होते हैं। यदि हमारे अन्दर योग वल नहीं है, तो उसका कारण है—"व्यर्थ संकल्पों की लिकेज (Leakage)" जितना हम निरन्तर परमात्मा की स्मृति में रहेंगे, उतना ही यह वल वढ़ता जावेगा।

(३) **सद्व्यवहार का बल**—"सद्व्यवहार अर्थात सात्विक भाव"। हमारे व्यवहार में सत्यता होनी चाहिये, व्यवहार में चालाकी या चापलूसी नहीं हो। हमारे सद्व्यवहार के द्वारा भी आत्मा को वहुत वल मिलता है। सद्व्यवहार को ही सत्य व्यवहार कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सद्व्यवहार के द्वारा हम अन्य आत्माओं पर अपनी छाप छोड़ सकते हैं।

(४) **स्नेह और सम्पर्क का बल**—स्नेह और सम्पर्क का वल भी हमारा वहुत ही मददगार सिद्ध होता है। यदि किसी के स्नेह का हाथ हमारे ऊपर है, तो कई परिस्थितियों का सामना करने में मदद मिलेगी। वास्तविक स्नेह और सम्पर्क कभी भी कुसंग की ओर नहीं ले जाता है। स्नेह और सम्पर्क में पारिवारिकता (Familirity) नहीं होनी चाहिये। स्नेह-सम्पर्क व्यक्ति को निर्माण और वलवान वनाता है।

(५) **त्याग का बल**—त्याग वृत्ति वाले के अन्दर त्याग का वल वहुत होगा। त्याग है —"बुराइयों का।" जव हम बुराइयों का त्याग करते हैं, तो इस त्याग द्वारा स्वाभाविक रूप से हमारे अन्दर अच्छाइयों को धारण करने का वल आ जाता है। त्याग वल से ही खुशी भी अपार रहती है।

(६) **दान का बल**—दान के द्वारा भी आत्मा को वल मिलता है। दान के लिये आवश्यक है—"शुभ वृत्ति"। जितना हम "शुभ वृत्ति" धारण कर दान करते हैं, उतना ही उससे आत्मा को वल प्राप्त होता है। चाहे वह फिर ज्ञान, गुण, धन अथवा अन्य किसी भी प्रकार का दान हो, उसमें 'शुभ वृत्ति' चाहिये। जितना हम ज्ञान और गुणों का दान करते हैं, उतना ही अन्य आत्माओं का हमें आशीर्वाद प्राप्त होता है और उस आशीर्वाद के परिणाम स्वरूप हमारी आत्मा को वल मिलता है।

(७) **तपस्या का वल**—तपस्या भी आत्मा को वहुत वल प्रदान करती है। "स्वयं भी आत्मस्वरूप में स्थित रहना और दूसरों को भी आत्मा समझना" यही सवसे वड़ी तपस्या है। इस तपस्या के द्वारा भी आत्मा के वल में वृद्धि होती है।

(८) **सेवा का बल**—सेवा के द्वारा भी हमारी आत्मा को वल प्राप्त होता है। वह सेवा चाहे तन-मन-धन किसी भी प्रकार की हो। लेकिन सेवा

(शेष पृष्ठ १९ पर)

अभी भी समय है सतयुगी प्रालब्ध पाने का

— ब्र० कु० शाकुन्तला, दादरी (भिवानी)

बहुत बड़ा गहरा व अन्तहीन समुद्र था वह ! दूर-दूर तक निहारने पर केवल पानी ही पानी नज़र आ रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे धरती की सतह पर कोई गहरी नीली चादर बिछा दी गई हो। कहीं भी उसका ओर-छोर दिखाई नहीं पड़ता था।

इस विशाल समुद्र के एक ओर अपार जनसमूह जिसमें बालक, युवा, वृद्ध सब थे, कुछ उदास व प्रश्नवाचक चेहरे लिए खड़े थे। ऐसा लगता था जैसे वो बहुत बड़ी मुसीबत के मारे हों और रास्ता भटक कर इस निर्जन स्थान पर आ गए हों। उनके चेहरे साफ़ बता रहे थे कि खाना उन्होंने कई दिन से छुआ तक नहीं है। अपनी निरीह व दुःख से बोझिल आँखें उठाकर वे समुद्र के पानी में कुछ ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे थे। कुछ ऐसा लग रहा था कि वे सब कुछ लुटा गँवा कर खाली हाथ यहाँ भाग आए हों। अपनी बेबस दृष्टि चारों तरफ ऐसे दौड़ा रहे थे कि हम बेसहारों के लिए भी शायद कोई सहारा बनकर आ जाए और हमें अपनी मंजिल तक पहुँचा दे। पर दूर-२ तक पानी ही पानी था और कहीं भी कोई आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही थी। रह-रह कर वे ऊपर की ओर आकाश को देख लेते थे।

इतने में दूर समुद्र के नीले तल पर एक धुँधली सी चीज नजर आई। कुछ नजदीक आने पर लगा कि कोई नैया है और उसका खिवैया धीरे-२ मस्ती में कुछ गुनगुनाता हुआ, चप्पू चलाता हुआ आ रहा है। सभी का हृदय जोर से धड़कने लगा। ज्यों-ज्यों नाव समीप आ रही थी वे सब हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि भगवन् ! दुखियों का दुःख हरने वाला तो एक तू ही है। तू ही हमारी रक्षा करना। नाव अब बिल्कुल सामने थी और स्पष्ट दिखाई दे रही थी। न जाने कब के असहाय और किस्मत के मारे उनके चेहरे अब खुशी से चमकने लगे थे और बार-बार भगवान का शुक्रिया अदा कर रहे थे कि आखिर तूने गरीबों की पुकार सुन ही ली। नाव किनारे आकर लग गई पर यह क्या उनमें से बहुत से व्यक्ति अपनी जगह से पीछे हटने लगे और आपस में कुछ फुसफुसाने लगे। **क्योंकि नाव का यह खिवैया कोई मानव नहीं था वह तो जैसे कोई फरिश्ता था। उसके तेजोमय शरीर से प्रकाश की किरणें फूट रही थीं जिससे आसपास का वातावरण प्रकाशमय हो रहा था।** ऐसा देखकर उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें होने लगीं। न जाने कौन है ? कहाँ ले जाएगा ? हो सकता है यह बीच भँवर में ले जाकर हम सबको डुबोकर मार डाले। क्या पता कोई राक्षस अपना मायावी रूप धरकर आया हो और उस पार ले जाते ही हमें निगल जाए। कुछ ऐसा भी प्रतीत होता है जैसे यह भगवान का भेजा हुआ दूत है और हमें इस मुसीबत से छुड़ाने आया है। और कुछ तो बिल्कुल ही निरुत्तर खड़े थे। इस प्रकार अनेक आशा और निराशा के भाव उनके चेहरों पर आ जा रहे थे। उन सबकी ऐसी मनो-दशा देखकर उस फ़रिश्ते ने धीरे से कहा—'आओ बच्चो ! विश्वासपूर्वक मेरी नाव में बैठ जाओ। मैं तुम्हें ऐसी जगह ले जाऊँगा जहाँ तुम्हें कभी कोई तकलीफ नहीं होगी। तुम सदा सुख शान्ति के झूले में झूलोगे। उसकी वाणी में इतना माधुर्य और इतनी सच्चाई टपक रही थी कि कुछ व्यक्ति विश्वासपूर्वक उस नाव में सवार हो गए। लेकिन बाकी कोई भी नाव में बैठने के लिए तैयार नहीं था। वे किसी अनहोनी घटना की आशंका से सहमे हुए से थे।

नाव यात्रियों को लेकर अपनी मंजिल की ओर चल पड़ी और देखते ही देखते आँखों से ओझल हो गई। समुद्र के किनारे अभी भी अपार जनसमूह

(शेष पृष्ठ २४ पर)

सांगली शक्कर कारखाना में आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० अतमाट बहन। उनकी बाईं ओर ब्र० कु० सुनिता तथा दाईं ओर भ्राता उत्तमराव फालके मेनेजिंग डायरैक्टर शक्कर कारखाना तथा ब्र० कु० रावल भाई विराजमान हैं।

कुन्दापुर (कर्नाटक) में आध्यात्मिक समारोह में ब्र० कु० ज्यन्ति, कलावती, शकुन्तला भारती, ब्र० कु० वसवराज जी, कमलाकर एल० अचरेकर, नारायण शेरेगार तथा कुशाल हेग्डे, सुब्रमन्यम् शर्मा मंच पर विराजमान हैं।

केथल (हरियाणा) में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र० कु० पुष्पा प्रवचन करते हुए। मंच पर (बाएं से) भ्राता मेहर चन्द जी, स्वामी अभेदानन्द जी, भ्राता लालचन्द वत्स, भ्राता आर० एल० गुप्ता जी, भ्राता श्रीचन्द सिंह, (प्रशासक केथल म्युनिसीपल कमेटी), ब्र० कु० उर्मिला तथा ब्र० कु० सन्तोष बहिन।

भावनगर में महिला समाज के उपक्रम में रखे गए आध्यात्मिक प्रवचन में ब्र० कु० गीता अपने विचार प्रकट करते हुए। उन की बाईं ओर जया बहन तथा दाईं ओर कमला बहन, ब्र० कु० ऊषा (बम्बई) तथा संतोष बहन बैठी हैं।

अहमदाबाद में रोटरी क्लब के निमन्त्रण पर "मेडीटेशन" पर प्रवचन करती ब्र० कु० शारदा जी

रायरंगपुरा (उड़ीसा) में आयोजित विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० सुशीला भाषण करती हुई। (दाएं से) ब्र० कु० कमलेश, भ्राता जी० एस० राव, सवजज, भ्राता वी० पंडा, ए० के० मिश्रा, तथा ब्र० कु० गोपीनाथ।

सचित्र समाचार

भुवनेश्वर में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० अंगूर बहन।

हिसार में हुए आध्यात्मिक सम्मेलन के अवसर पर ब्र० कु० सुदेश, प्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता शिवराम जिन्दल को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

हरिद्वार में औद्योगिक शान्ति प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स के जनरल मैनेजर भ्राता ए० कावसगप्पा जी।

हिमतनगर द्वारा संचालित मघराज गीता पाठशाला के वार्षिक उत्सव के अवसर पर सर्व धर्म सम्मेलन का उद्घाटन प्रमुख साबरकांठा ज़िला पंचायत द्वारा किया जा रहा है। (बाएं से) ब्र० कु० सरला, भ्राता गुणवंत लाल, विधान सभा सदस्य, फादर ए० डी० फोन्सेका, हफीज़ हब्बीबुलाखान, भ्राता जम्मू भाई भट्ट तथा भ्राता नटु भाई चौहाण खड़े हैं।

विराट नगर (नेपाल) में सेवा केन्द्र के लिये नए मकान का उद्घाटन कोशी अन्चालाधीश भ्राता धर्म बहादुर थापा करते हुए। ब्र० कु० शान्ता, ब्र० कु० कानन ब्र० कु० सावित्री तथा अन्य भाई बहन साथ में खड़े हैं।

(अभी भी समय है सतयुगी प्रालब्ध पाने का
पृष्ठ २१ का शेष)

प्रश्नवाचक दृष्टि लिए दूर-दूर तक फैले समुद्र के पानी को निहार रहा था। उनकी समस्याएँ ज्यों की त्यों थीं। बार-बार यही एक पुकार आ रही थी-- भगवन्! अब हमारा क्या होगा? ओ धरती माता! तू ही फट जा ताकि हम तेरी गोद में समा जाएँ। ओ निर्दयी सागर! तू ही हम पर दया कर और हमें अपनी लहरों में समेट ले। इस तरह उनकी करुण ध्वनि से सारा आकाश-पाताल गूंजने लगा। इतने दूर से वही नाव फिर आती दिखाई दी। आशा की एक लहर फिर से उनके चेहरों को आश्वस्त करने लगी। जब नाव किनारे आकर लगी तो देखा उसका खेवनहार वही फरिश्ता था। जो आस-पास अपनी अलौकिक छटा बिखेर रहा था। अब की बार फिर कुछ व्यक्ति हिम्मत कर उसमें सवार हो गए लेकिन बहुत बड़ी संख्या में लोग अभी भी नाव के पास आने को तैयार नहीं थे। उन्हें ऐसा लगा रहा था जैसे यह नाव न होकर कोई दैत्य हो जो पास जाते ही उन्हें निगल जाएगा।

और नाव का खिवैया धीरे-धीरे चप्पू चलाता हुआ, मस्ती में कुछ गुनगुनाता हुआ जिधर से आया था उसी दिशा में चला गया। धीरे-धीरे नाव ने अपनी दूरी तय की और वह ऐसे स्थान पर पहुँची जहाँ का दृश्य यात्रियों ने पहले कभी नहीं देखा था। नाव से नीचे पैर रखते ही एक ऐसी खुशबू भरा झोंका आया कि उनके मन मस्तिष्क को एक अजीब तरह की मस्ती से भर दिया। यह खुशबूदार हवा का झोंका एक बगीचे से आया था जो पास ही था। इस बगीचे में ऐसे सुन्दर-२ बड़े-बड़े व ऐसे खुशबू वाले फूल थे जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखे थे। उनकी खुशबू इतनी मन-मोहिनी थी कि सब के सब अपनी सुध-बुध भी खो चुके थे। इस बगीचे के पास ही एक बहुत सुन्दर तालाब था जिसमें तरह-तरह के कमल खिले हुए थे। सफेद बत्तखें तैर रही थीं और पास ही सफेद हंसों के जोड़े बिचरण कर रहे थे। एक बकरी और एक शेर को वहाँ एक साथ पानी पीते देखकर तो उन्होंने दाँतों तले अपनी अंगुली ही काट डाला। बगीचे से निकलकर आगे गए तो देखा यहाँ के महल सोने-चाँदी के थे। इनमें रहने वाले तो देवता ही थे जिनका प्यार व आदर सत्कार पाकर तो उनका हृदय गदगद् हो गया। ३६ प्रकार के भोजन वहां खाने के लिए तैयार थे। वे कई दिनों के भूखे थे अतः खा-पीकर आराम से सो गये।

नाव फिर समुद्र में प्रवेश कर गई। और दूसरे किनारे पर जा लगी। वहाँ पर उन भटके हुए यात्रियों की भीड़ बेकाबू थी। अब की बार तो उनमें से अधिकतर बेचारे निराश होकर जमीन पर लेट गए थे और ऐसी गहरी नींद में सो गए थे कि जागने का नाम ही न ले रहे थे। उन कुम्भकरणों को जगाने के लिए उस फरिश्ते ने अजीब तरह की घंटी बजाई। मैं बिस्तर पर उठकर बैठ गई। देखा घड़ी में ४ बजे का अलार्म टर्न-टर्न कर रहा था। मैं अपने सपने को याद कर धीरे-२ मुस्कराई। लेकिन जागृतावस्था में भी मुझे साफ दिखाई दे रहा था कि नाव यात्रियों को भर-भर कर अभी भी उस पार छोड़ रही है, जहाँ दुःख, कलह, विकार, अशान्ति, सुस्ती का नामोनिशान नहीं है। अभी भी समय है स्वार्गिक प्रालब्ध बनाने का। अभी भी अपने भाग्य का सितारा चमकाया जा सकता है। अभी भी शिव बाबा अव्यक्त रूप में ज्ञान वर्षा कर रहे हैं। इस नर रूपी विषय सागर के पार बसी स्वर्ग नगरी में जाने का यह आखिरी सुअवसर है। अब नहीं तो कभी नहीं। बाद में तो सिर्फ ये पंक्तियाँ याद करके पश्चाताप के आँसू ही हाथ लगेंगे।

जिन ढूंढ़ा तिन पाईयाँ गहरे पानी पैठि।
मैं बोरी बूड़न डरी रही किनारे बैठि॥

आत्मा, परमात्मा एवं सृष्टि की यथार्थ जानकारी के लिए इतिहास के यथार्थ ज्ञान और व्याख्या की आवश्यकता

प्रायः राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक सिद्धांतों की रचना के लिए इतिहास के ज्ञान की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए रूसो (Rousseau), हैगल (Hegel), कार्ल मार्क्स (Karl Marx) ने अपने सामाजिक एवं आर्थिक सिद्धान्तों को इतिहास की अपनी समझ और सूझ-बूझ के आधार पर निर्धारित किया। लेकिन इस तथ्य को अब तक समझा नहीं गया कि मनुष्य का रहन-सहन और उसका दृष्टिकोण ऐतिहासिक घटनाओं की उसकी समझ पर आधारित है और विश्व इतिहास के सम्पूर्ण ज्ञान के बिना मनुष्य को आत्मा-परमात्मा और सृष्टि का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता। यदि मनुष्य को विश्व इतिहास का यथार्थ ज्ञान नहीं है तो वह संसार के बारे में गलत धारणायें बना लेता है और संसार की घटनाओं के प्रति उसका दृष्टि-कोण अयथार्थ हो जाता है और वह गलत रास्ता ले लेता है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए हम कुछ उदाहरण देंगे।

उदाहरण

मानवता का लिखित इतिहास २५०० या ३००० वर्ष के पहले का नहीं मिलता है। इस अवधि के बीच मानव को अनेक कष्ट झेलने पड़े। मनुष्य का मनुष्य द्वारा शोषण हुआ। काम वासना से प्रभावित अपहरण, परस्त्रीगमन, व्यभिचार इत्यादि की अनेक घटनायें हुईं। इन सब बातों या इनमें से किसी एक बात पर ज़ोर देते हुए इतिहासकारों, राजनैतिक विचारकों, मनोवैज्ञानिकों, धर्मस्थापकों तथा दार्शनिकों ने अपने सिद्धान्त बनाये। इनमें से अनेक विद्वानों ने २५०० या ३००० वर्ष के पहले के समय के इतिहास पर विचार नहीं किया क्योंकि वह इतिहास हमारे पास आधुनिक ढंग से लिखित रूप में नहीं मिलता। आप देखेंगे कि आदिकाल के इतिहास की अज्ञानता ने मानव, विश्व तथा परमात्मा के बारे में अनेक भ्रान्ति पूर्ण सिद्धान्तों को जन्म दिया।

उदाहरण के लिए, महात्मा बुद्ध का विचार था कि यह संसार दुःखों से भरा हुआ है और यह सदा-काल से रोग, बुढ़ापा तथा मृत्यु के कारण दुःखी होता आया है। अब क्योंकि दयालु, ज्ञान सागर, आनन्द के सागर तथा कल्याणकारी परमात्मा ऐसी सृष्टि की रचना नहीं कर सकते, इसलिए बुद्ध का या तो रचयिता परमात्मा में विश्वास नहीं था या वह इस विषय पर खामोश रहे। इसलिए उन्होंने इस बात पर विचार किया कि उनके सामने मूल समस्या यह थी कि मनुष्य निर्वाण या दुःखों से मुक्ति कैसे पा सकता है। इसलिए उनका ज्ञान मनुष्य को इस संसार को सुखी बनाने का प्रोत्साहन नहीं देता बल्कि वह संसार के आवागमन से छूटने के प्रयत्न का उपदेश देता है। उसी प्रकार से बुद्ध के बारे में यह कहा जाता है कि जब उनके एक शिष्य ने दुःखों और कष्टों का कारण पूछा तो बुद्ध ने उस व्यक्ति का उदाहरण दिया जो तीर लगने से घायल हो गया था और कहा, "अब हमारे सामने प्रश्न यह नहीं है कि कब और किसने इस व्यक्ति को तीर मारा बल्कि वास्तविक प्रश्न यह है कि इस तीर को कैसे निकाला जाए और इस व्यक्ति को पीड़ा से आराम मिले।"

यदि बुद्ध को यह मालूम होता कि इतिहास में पहले एक ऐसा समय भी हुआ है जिसमें मनुष्य को सम्पूर्ण स्वास्थ्य तथा स्वर्गीय सुख प्राप्त थे तो वह एक भिन्न-दर्शन (ज्ञान) का प्रचार करते। तब वह इस संसार की पूर्ण रूप से निन्दा न करते कि संसार में सदा काल से दुःख और मुसीबतें रही हैं। इस ज्ञान के बिना, सतयुग और त्रेतायुग में, जो कि उससे पहले के युग थे, मनुष्य सम्पूर्ण सदाचारी, स्वस्थ, सम्पन्न तथा सुखी था। बुद्ध ने इस प्रश्न पर वाद-विवाद नहीं किया कि परमात्मा सतयुगी दुनिया का रचयिता है, बल्कि उन्होंने संसार के अन्धकार-

मयपन को सबके सामने रखा। इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए डा० राधाकृष्णन ने कहा, "दर्शन के सम्पूर्ण इतिहास में किसी ने भी मनुष्य जीवन के दुःखों को इतना बढ़ा-चढ़ा कर नहीं उभारा जितना कि बुद्ध ने। उपनिषदों में वर्णित उदासीनता एवं वैमनस्य यही मुख्य स्थान रखते हैं ···।" अन्य स्थान पर डा० राधाकृष्णन कहते हैं, "बुद्ध धर्म में यह प्रवृति रही है कि कम काले को अधिक काला और हरे को भी काला किया जाए। सम्पूर्ण दृष्टिकोण इसी सिद्धान्त पर केन्द्रित होता है कि जीवन में दुःख एवं कड़वापन है ···।"

इसी प्रकार, क्योंकि शंकराचार्य को यह दृढ़ विश्वास नहीं था कि सतयुग में सम्पूर्ण सुख था, उन्होंने परमात्मा को रचयिता नहीं समझा बल्कि संसार को कल्पना समझा और संसार से भागने का उपदेश दिया। उनका यह विचार था कि संसार सदाकाल से दुःखों व कष्टों से भरपूर रहा है या संसार में कभी भी सम्पूर्ण सुख व पवित्रता नहीं थी और इसलिए यह संसार परमात्मा की रचना नहीं हो सकता। और इसी कारण संसार के विषय में, स्वयं के बारे में तथा मनुष्य का परमात्मा के साथ सम्बन्ध के विषय में एक भ्रान्तिमूलक विचार बनाया। उन्होंने अपने विचारों के वर्णन करने में इतिहास के आदि-काल का प्रयोग नहीं किया। इसलिए बुद्ध और शंकराचार्य ने इस बात का स्पष्टीकरण नहीं दिया कि कब और कैसे संसार में दुःख प्रवेश हुए। केवल वे ही नहीं अपितु लगभग सभी धर्म संस्थापकों ने संसार को दुःखों से भरपूर बताया है। किसी ने भी ऐसा नहीं बताया कि संसार में अब तो दुःख है परन्तु यहाँ एक ऐसा युग था जिसे सतयुग कहा जाता है, जिसमें दुःखों का नामो-निशान नहीं था।

फ्रायड का सभ्रान्त विचार

अब फ्रायड (Signund Freud) जैसे मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों को लीजिए। उन्होंने हमें मनुष्य स्वभाव के विषय में गलत धारणाएँ बताईं। फ्रायड ने कहा है कि बाल्यावस्था से ही मनुष्य के व्यवहार में काम-विकार की भावना दबी रहती है। फ्रायड ने काम-प्रवृति से सम्बन्धित मनुष्य के अनेक मानसिक रोगों एवं व्यवहार को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। जहाँ तक मनुष्य की वर्तमान मानसिक स्थिति व ज्ञानशक्ति का सम्बन्ध है, फ्रायड का विचार ठीक था, यद्यपि यहाँ भी फ्रायड ने मनुष्य की कामुकता से ओत-प्रोत मनस्थिति पर सीमा से अधिक ज़ोर दिया है। परन्तु यदि फ्रायड को यह ज्ञान होता कि मनुष्य की वर्तमान मानसिक स्थिति उसके मन की दूषित स्थिति है और सतयुग में मनुष्य देहअभिमानी नहीं था जैसा कि आज है और इसलिए वह व्यभिचार वृत्ति से मुक्त था, तो मनुष्य के स्वभाव के बारे में उसके विचार भिन्न होते।

मनोवैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ तथा सामाजिक लोगों के संसार के विषय में भ्रान्तिमूलक विचार

इसी प्रकार परिवार, राज्य तथा राजनैतिक संस्थाओं के विषय में होबस, रूसो, हीगल और कार्ल मार्क्स इत्यादि द्वार प्रतिपादित सिद्धान्त ऐसे न होते जैसे कि आज हैं यदि उन्हें यह मालूम होता कि मानव इतिहास के आदिकाल में, दयालु, बुद्धिवान तथा सदाचारी राजा-रानी का राज्य चलता था और वहाँ झगड़ालू कबीले नहीं थे और न वहाँ किसी का शोषण होता था, यद्यपि रूसो (Rosseau), हेगल (Hegel) और कार्ल मार्क्स (Karl Marx) का यह विश्वास था कि आदिकाल में मनुष्य को अधिक स्वतन्त्रता थी और वह दूसरों का शोषण भी नहीं करता था। जिस समाज के बारे में ये विचारक बात करते हैं, वह द्वापर युग का समाज था न कि सतयुग का, जिसमें सभ्यता तथा आर्थिक स्थिति सर्वोत्तम थी। इसलिए उनके सिद्धान्त पूर्ण सत्यों पर आधारित नहीं हैं क्योंकि उन्होंने इतिहास के केवल आधे भाग पर बिचार किया है और वह भी वह समय था जबकि मनुष्य के नैतिक जीवन का पतन हो चुका था।

यदि हम मार्ग्रेट मीड (Margaret Mead) जैसे प्राच्य शास्त्रियों एवं समाज शास्त्रियों के विचारों

पर विचार करें जिन्होंने इतिहास के समस्त काल में पुरुषों का महिलाओं पर अधिकार का विरोध किया और महिला स्वतन्त्रता-आन्दोलनों को आरम्भ किया तथा उन्हें सहयोग दिया तो हम देखेंगे कि उन्होंने भी अपने सिद्धान्तों की रचना में अशुद्धियाँ की हैं क्योंकि सतयुग में पुरुष-प्रधान समाज नहीं था और हर नागरिक को पूर्ण स्वतन्त्रता थी तथा मानव-अधिकार प्राप्त थे। पुरुष-प्रधानता, गुलामी, पीड़ा, मानव अधिकारों से वंचित करने का युग तब आरम्भ हुआ जब मनुष्य देह-अभिमानी बना और वह काम-वासना, लोभ तथा क्रोध का गुलाम बना। यह उस काल की बात है जब समाज के लोग शिकार करके अपना जीवन व्यतीत करने लगे वे गुफाओं में रहने लगे। ऐसे समाज का निर्माण सृष्टि-चक्र में सबसे पुरातन आदिकाल के तुरन्त बाद हुआ जबकि इन दोनों कालों के बीच कुछ प्राकृतिक आपदायें तथा उथल-पाथल हुई और जब सर्वोत्तम सभ्यता अपनी अन्तिम निशानियों सहित प्रायः लोप हो गई।

इतिहास की यथार्थ व्याख्या अति आवश्यक

न केवल इतिहास के सबसे पुरातन आदिकाल का ज्ञान आवश्यक है जो कि हमारे पास लिखित रूप में नहीं है, परन्तु इतिहास में जो शक्तियाँ कार्य कर रही हैं उनकी यथार्थ व्याख्या भी आवश्यक है। क्या यह मनुष्य की लोभ वृत्ति और स्वार्थ भावना है या उसकी कामवासना की इच्छा है, या उसकी धार्मिक प्रवृत्ति है जिन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं को प्रेरित किया ? सृष्टि के तथा मनुष्य के स्वभाव को समझने के लिए इन कारणों के समीकरण की आवश्यकता है।

पुनश्चः यह भी जानने की आवश्यकता है कि क्या इतिहास में अनगिनित वृत्तान्त हैं जिनकी पहली घटनाओं के साथ या आनेवाली घटनाओं के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, या इतिहास एक सम्पूर्ण आयोजित वृत्तान्त है जिसमें एक घटना का दूसरी घटना से सम्बन्ध है ? **क्या इतिहास की एक सम्पूर्ण योजना और उद्देश्य है ? क्या इसका कोई यथार्थ अर्थ तथा लक्ष्य है ? क्या इसके वृत्तान्तों में विचार करने योग्य कुछ आदर्श है या सभी वृत्तान्त बिना किसी अर्थ के हैं ? क्या हर युग के कुछ विशेष मूल्य हैं या किसी युग की कोई विशेषता नहीं है ? क्या विश्व इतिहास की कोई मुख्य भूमिका है या इसका कोई विषय या कहानी नहीं है जिस केन्द्र बिन्दु के साथ चहुं ओर घटनायें जुड़ी हुई हैं ? इन विषयों पर खोज करने से हमें सृष्टि, आत्मायें तथा परमात्मा के बारे में यथार्थ ज्ञान प्राप्त होगा।**

वास्तव में सृष्टि, आत्मायें तथा परमात्मा के विषय में यथार्थ जानकारी हमें नहीं मिल सकती यदि हम इतिहास के तथ्य तथा घटनाओं की सहायता के बिना केवल तत्त्व की खोज करते रहें। उदाहरण के लिए, यदि यह कहा जाता है कि परमात्मा दयालु, कृपालु तथा प्रेम का सागर है तो इस कथन की सत्यता तभी जानी जा सकती है जब यह स्पष्ट किया जाये कि विश्व इतिहास में किस समय परमात्मा ने समाज या मानव जाति के प्रति दयालु, कृपालु और प्रेम के सागर की भूमिका निभाई। मनुष्य यह जानने का भी इच्छुक होगा कि क्या मानव इतिहास में परमात्मा की कोई भूमिका है ? इस प्रश्न का एक निश्चित उत्तर आवश्यक है क्योंकि कुछ ऐसे धार्मिक विचारक हैं जिनका यह मत है कि विश्व इतिहास की हर घटना परमात्मा की पूर्व-निश्चित योजना के अनुसार होती है जब कि कई विचारकों का यह मत है कि मनुष्य पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है और समूचे इतिहास में परमात्मा की कोई प्रेरणा नहीं है।

इतिहास के प्रारम्भिक काल या सर्वप्रथम युग को जाने बिना मनुष्य आत्मा या इसके वास्तविक स्वभाव को नहीं जान सकता। इसका यह कारण है कि इतिहास के आदिकाल का ज्ञान न होने से आज सृष्टि तथा मानव के मूल ज्ञान के बारे में ऐसे अनेक मत प्रचलित हैं जिनसे समाधान होने की बजाय

अधिक प्रश्न उत्पन्न होते हैं। डार्विन के विकासवाद नामक सिद्धान्त (Darwin's theory of biological evolution) के अनुसार मनुष्य का विकास अमीबा (amoeba) व बन्दर से हुआ, बाद में मानव-समरूप में तथा अन्त में आधुनिक मानव के रूप में विकास हुआ। दूसरे मत के अनुसार लगभग ६००० वर्ष पहले मनुष्य की रचना ईडन के बगीचे में परमात्मा के अपने रूप में हुई। एक अन्य सिद्धान्त के अनुसार उपरोक्त सभी सिद्धान्त व तर्क विवेकरहित हैं और ऐसा समझकर उन्हें अस्वीकार किया है। इसलिए इस प्रश्न का समाधान आवश्यक है कि क्या विश्व-इतिहास का प्रारम्भिक काल सम्पूर्ण सुख शान्ति का काल था और उस समय सभ्यता अपने शिखर पर थी और तब से धीरे-२ गिरावट हुई या आदिकाल में मानव एक शिकारी था और गुफ़ाओं में रहता था और धीरे-धीरे निरन्तर उच्चतर सभ्यता की ओर अग्रसर हुआ। क्या मूल रूप में मनुष्य एक दिव्य व्यक्ति था या उसके पूर्वज वन्दर थे ? क्या इतिहास एक अनादि नाटक है जिसमें आत्मायें विभिन्न शरीर धारण करती हैं, जिस प्रकार नाटक में विभिन्न भूमिकायें निभाने के लिए विभिन्न वस्त्र बदलने पड़ते हैं, या इतिहास बिना किसी आध्यात्मिक महत्त्व के कुछ वत्तान्तों का केवल एक संग्रह है ?

इसके अतिरिक्त क्या इतिहास मनुष्य को कोई नैतिक या आध्यात्मिक शिक्षा देता है ? क्या विश्व की घटनायें यह सिद्ध करती हैं, कि सभ्यता का उत्थान और पतन (जैसे कि बैबीलोन, रोम, मिश्र की सभ्यता) कुछ सार्वभौमिक, नैतिक सिद्धान्तों के अनुसार हुआ या ऐसे कोई नैतिक सिद्धान्त नहीं थे जिन पर सभ्यता आधारित थी ? पौराणिक या काल्पनिक नैतिक कहानियों की भेंट में इतिहास मानव परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम हो सकता है यदि वास्तव में विश्व की घटनाओं और समाज की स्थिति को निर्धारित करने में नैतिक शक्तियाँ सक्रिय रही हैं।

उपरोक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विश्व इतिहास के प्रति सही दृष्टिकोण बनाने के लिए इतिहास की यथार्थ व्याख्या तथा उसका यथार्थ ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि हर मनुष्य को संसार तथा इतिहास का कुछ ज्ञान होता है, चाहे वह थोड़ा ही हो, इसलिए उसका रहन-सहन, उसका व्यवहार, उसके कर्म, उसके इस यथार्थ या अयथार्थ ज्ञान पर आधारित होते हैं। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हो सकता जिसे भूतकाल का या इतिहास का कोई ज्ञान न हो। इसलिए यह समझ लेना चाहिए कि इतिहास का पूर्ण ज्ञान जाने तथा अनजाने में हमारे चरित्र तथा जीवन दर्शन को निर्माण करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए यह उचित ही होगा कि हमें इतिहास का यथार्थ ज्ञान हो और उसके मूल तत्त्व की सही जानकारी हो, क्योंकि इसके बिना मनुष्य, जीवन में अयथार्थ मार्ग अपना लेगा। इसलिए शिव बाबा ने हमें संक्षेप में इतिहास का आदि से अन्त तक ज्ञान समझाया है और इसकी सम्पूर्ण योजना तथा लक्ष्य बताया है और इसकी पुनरावृत्ति का सिद्धान्त समझाया है। उन्होंने बताया है कि तीसरा नेत्र प्राप्त करने के लिए मनुष्य को विश्व इतिहास का आध्यात्मिक, धार्मिक एवं राजनैतिक स्पष्टीकरण आवश्यक है। ✱

शिव भगवानुवाच

(१) मीठे बच्चे, इस ईश्वरीय ज्ञान का मूल सार है—सर्व हदों से निकल "बेहद" शब्द के स्वरूप में स्थित होना। बेहद की बुद्धि, बेहद की दृष्टि, बेहद के सेवाधारी। तो इसी बेहद की स्थिति से सर्व मेरे-पन की हदों को समाप्त करो।

(२) प्यारे बच्चे, हद को पार करने की निशानी है उपराम बनना। किसी भी कर्म रूपी डाली के बन्धन में न फंसना। कोई कैसा भी श्रेष्ठ कर्म हो लेकिन कर्म के बन्धन में फंसना, हद की कामना रखना यह भी सोने की जंजीर है। अब इससे भी मुक्त बनो।

युवा वर्ग से

अनुशासन का महत्व

(ब्र०कु० अंजू, मुजफ्फरपुर)

आजकल जहाँ-तहाँ छात्रों के जीवन में व्याप्त अनुशासन हीनता दिखाई देती है। किसी भी कार्य को युवावर्ग के सहयोग बिना सम्पन्न नहीं किया जा सकता। अतः आज जो इतने विघटनकारी तत्त्व दंगे फैला रहे हैं उनमें भी युवावर्ग में व्याप्त अनुशासन-हीनता की झलक मिलती है तो आओ, आज हम उस विषय पर थोड़ी चर्चा करें।

जानते हो ! दीपक तो जलकर प्रकाश के साथ काजल भी देता है किन्तु 'अनुशासन' तो प्रकाश ही प्रकाश देता है। इसके बिना विद्यार्थी जीवन मुर्दे के समान है जिसे आदर्श समाज तिरस्कृत कर देता है। हम छात्रों का जीवन वरदान स्वरूप है। हमारी आँखों में अनगिनत सपने हैं और भुजाओं में शक्ति स्रोत उमड़ते रहते हैं। हमारे जीवन की केन्द्रस्थ धुरी एकमात्र 'अनुशासन' ही होनी चाहिए न कि इन शक्तियों का विघटनकारी कार्यों में उपयोग करें। जैसे पुष्प सुई और धागे का 'अनुशासन' मानकर हार बनता है ऐसे ही जीवन नियमों और नीतियों का 'अनुशासन' मानकर वरेज्य बन जाता है। जानते हो ! जिस प्रकार रथ का एक चक्र यदि पूरब की ओर तथा दूसरा पश्चिम की ओर चले तो रथ की क्या गति होगी ? उसी प्रकार 'मन' रूपी 'सेनापति' की अवज्ञा कर दोनों पाँव दो ओर चलें, दोनों कान दो बातें सुनें, दोनों हाथ दो ओर उठें तो हमारी क्या स्थिति होगी ! युद्ध के मैदान में विजयी होने का भी एकमात्र रहस्य है—बिना क्यों, कैसे; का प्रश्न उठाये सेनापति के इशारे पर चलना। हम भी तो कर्मक्षेत्र में माया से लड़ रहे हैं ना ! तो सुप्रीम टीचर की श्रीमत का मन, वाणी और कर्मणा से प्रति सेकेण्ड, प्रति श्वाँस पालन करना होगा तभी विजय मिलेगी।

विद्यार्थी जीवन गुणों का केन्द्र है। अतः गुणों के सागर शिव बाबा से जब तक बुद्धि की लाईन क्लीयर नहीं होगी तो गुणों के केन्द्र बन नहीं सकते। आपको दुनिया आशा की निगाह से देखती है कि भविष्य में संसार की बगिया के महकते सुमन बनोगे ! कितना वरदानी है यह जीवन !

देखो आज प्रकृति के कण-कण अनुशासन की दास्तान कर रहे हैं। चाँद और सूर्य अनुशासन में बँधकर ही रात-दिन की आँख-मिचौनी खेल रहे हैं। ऋतुचक्र भी अनुशासन की कील पर घूमकर ही सुख, स्वास्थ्य एवं समृद्धि की सृष्टि करता है तो फिर हम आत्माओं को भी कौन रोक सकता है ? क्या पुल व बाँध बाढ़ को रोक सकते हैं ? क्या अच्छी से अच्छी छत बरसात को आने से रोक सकती है ?

हमारे सुप्रीम टीचर शिव बाबा ने सिर्फ चार बातें बतायीं जिनके द्वारा हम परमात्मा को सर्व सम्बन्धों में अन्य सम्बन्ध तथा सम्पर्क वाली आत्माओं को सम्मान देते हुए श्रेष्ठ अनुशासन में चल सकते हैं :

१. **बाप के प्रति**—**बाप** के रूप में फालोफादर ! यानी ब्रह्मा बाबा को फालो करना। **टीचर** के रूप में पढ़ाई का ख्याल रखना। नियमित रूप में पढ़ना, पढ़ाना, धारण करना एवं कराना। **सतगुरु** के रूप में देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूल स्वयं को आत्मा समझ शिव पिता (सतगुरु) को याद करना। क्योंकि पाप भस्म कर सद्गति पाने का एकमात्र यही उपाय है। **साथी** के रूप में बाबा के संग का हर पल अनुभव करते हुए हर कार्य उनकी श्रीमत से करना। एक उन्हीं की लगन हो, दूसरा बुद्धि में आये ही नहीं। तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से बोलूं ...।

२. **ज्ञान के प्रति**—दुनिया में अल्पज्ञ साधु-सन्त भी जो कुछ सुनाते, सुनने वाले बिना कुछ

प्रश्न किए 'सत्य वचन महाराज' कहते रहते। तो हमारा बाबा जो ज्ञान का सागर है, उनके द्वारा दी गई नॉलेज के प्रति अगर ये क्वेश्चन उठे कि कैसे होगा, क्या होगा, क्यों ? तो यह संकल्प आना माना ज्ञान की वास्तविकता में विश्वास नहीं है। ऐसे प्रश्न करना तो दुनिया वालों का काम है। सदैव याद रखो—ड्रामा में जो निश्चित है वही होगा, एवं जो होगा, कल्याणकारी होगा। सर्व के प्रति कल्याण की भावना होगी तो आपके प्रति अकल्याण हो ही नहीं सकता।

३. **स्व के प्रति**—बाबा से अब तक अपनी जो भी महिमा सुनी, उसका स्वरूप बनकर स्वयं को रिगार्ड दो। हे सर्व शक्तिवान के मास्टर सर्व शक्तिवान बच्चे ! स्वयं के प्रति ऐसे कमज़ोर संकल्प स्वप्न में भी न लाओ कि मैं ऐसा नहीं कर सकता, बाबा तो ऐसा कहते हैं, लेकिन मुझसे नहीं होगा। ये संकल्प लाना माना स्वयं के वास्तविक आवाज़ की प्रेरणा की अवहेलना करना। विश्व के आधार मूर्त एवं उद्धार मूर्त ! सर्व शक्तियों के सागर के बच्चे, बाप का साथ हो तो कुछ भी असंभव नहीं !

(४) **सम्पर्क वालों व सम्बन्धियों के प्रति**—सर्व के प्रति, चाहे वो ज्ञानी हो या अज्ञानी, लेकिन शुभ भावना, शुभ कामना रखनी है। इसमें 'सदा' शब्द भी जोड़ो। बेहद के कल्याणकारी, सदा बेहद के स्नेही। सारा विश्व आपका परिवार है, चाहे अभी कोई कहीं भी भटक रहे हों, तुम्हें सदा शुभ भावना रखकर सदा सर्व का कल्याण करना है।

देखा ना ये बातें कितनी राजयुक्त हैं। याद रहे **निज पर शासन फिर अनुशासन**। स्वयं को बदलो, किसी से बदला लेने की भावना मत रखो। दूसरे स्वतः ही आपका अनुसरण करेंगे। **सदा शुभ संकल्प** को आधार मानकर साइलेंस (Silence) की शक्ति को प्रयोग में लाओ तो कोई भी कार्य आपके लिए असंभव नहीं है। इन ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करेंगे तो चहुँदिशा में सफलता आपको हार पहनायेगी।

—०—

"शिव बाबा"

ब्र० कु० गौतम, वणी (महाराष्ट्र)

परमपिता परमात्मा जिनका शिवबाबा है नाम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम ॥ धृ० ॥
परमधाम के वासी हैं वो संगमयुग पर आते हैं।
प्रजापिता ब्रह्मा के तन में बैठ ज्ञान बतलाते हैं।
ज्ञान को जो कोई धारण करते पहुंचे वह सुखधाम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम ॥ १ ॥
शाम, सुबह मुरली के द्वारा उनकी श्रीमत मिलती है।
शिव बाबा की श्रीमत पर ही आत्मा जो कोई चलती है।
होती है वह सुन्दर फिर से, बन गयी है जो श्याम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम ॥ २ ॥
श्रीमत की यह लछमन रेखा लांघती जब हम सीताएँ।
माया रावण का हक हम पर उसी समय से होता है।
रावण की इस कड़ी कैद से वही छुड़ाये राम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम ॥ ३ ॥

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० श्रीराम, ब्र० कु० सत्यनारायण, दिल्ली द्वारा संकलित

पिछले मास की तरह इस मास में भी ईश्वरीय सेवा का समाचार विभिन्न सेवा-केन्द्रों से प्राप्त हुआ है, जिसका सारांश यहां लिखा जा रहा है :—

नारायण गढ़ (नेपाल) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि 'नारायणी गेस्ट हाउस' में त्रिदिवसीय विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन सी० आर० ओ० भ्राता कृष्ण लाल पंत जी ने किया। उन्होंने अपने भाषण में माउण्ट आबू का अपना अनुभव सुनाया।

जनपद फर्रुखाबाद सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि "महला विचार गोष्ठी" में "बच्चों के विकास में मां की आत्मिक शक्ति का योगदान" विषय पर प्रवचन हुआ, जिसमें 'नारी कुंज' "महिला क्लब" तथा 'लायन्स क्लब" से सम्बधित लगभग ४० बहनों ने भाग लिया।

फिरोजाबाद सिरसा गंज सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि मदन पुर गांव में आयोजित सार्वजनिक मेले में ५ दिन के लिये शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे निकटवर्ती कई गांवों के हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

वर्धा उपसेवा-केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि महिला समाज एवं मराठी साहित्य मंडल के सभा गृह में ७ दिन के लिये आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन के समय प्रवचनों तथा गीतों का कार्यक्रम भी रखा गया तथा अतिथियों को ईश्वरीय सौगातें दी गईं।

कल्याण सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि भिवंडी में गणेश चतुर्थी के अवसर पर तीन दिन के लिये आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके अतिरिक्त डाक्टर वर्ग का सम्मेलन भी बुलाया गया और रोटरी क्लब में भी प्रवचन का कार्य क्रम रखा गया।

भावनगर सेवा केन्द्र से ब्र० कु० गीता लिखती हैं कि भावनगर महिला समाज के निमंत्रण पर बहुत सुन्दर कार्यक्रम रखा गया। "समाज में नारी जाति की जिम्मेवारी और उसका वर्तमान स्थान क्या है ?" विषय पर प्रवचन हुआ। इसके अतिरिक्त स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र ट्रेनिंग स्कूल तथा भावनगर रबर इन्डस्ट्रीज़ में प्रवचन के कार्य क्रम रखे गये।

पाटनगर (गांधी नगर-गुजरात) सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्ती पोर गांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। गांधी नगर में चार दिवसीय विश्व शांति प्रदर्शनी तथा तीन देवियों की झांकी सजाई गई जिनसे भी लगभग २५०० आत्माओं को दिव्य संदेश प्राप्त हुआ।

मिरजापुर सेवा केन्द्र से ब्र० कु० कमल लिखती हैं विन्ध्याचल के नौरात्रि मेले में एक सप्ताह के लिये राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विन्धावासिनी के दर्शन करने हेतु आए हुए लाखों भक्तों को शिव तथा शिव शक्तियों का परिचय तथा दिव्य संदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त रेनुकूट के रामलीला ग्राउंड में भी २ दिन के लिये राजयोग प्रदर्शनी लगाई गई।

पटना सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बक्सर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया और साथ-साथ श्री लक्ष्मी की चैतन्य झांकी भी सजाई गई। जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। जिनमें विशेष शिक्षा विभाग के अध्यापकगण तथा प्रिंसिपल महोदय शामिल हैं।

बेलगाम सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहाँ पर "विश्व स्वास्थ्य संघ" तथा भारत सरकार के संयुक्त प्रयास से आयोजित 'आरोग्य सप्ताह' के अवसर पर ब्र० कुमारी बहिनों के प्रवचन हुए। इस कार्यक्रम में जन-स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त निर्देशक भ्राता देश पांडे जी, जिला स्वास्थ्य अधिकारी भ्राता हुइलगोल, सिविल सर्जन भ्राता पाटील तथा शहर के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

गोवा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सावंतवाडी उपसेवा केन्द्र के तीसरे वार्षिक दिवस के अवसर पर दत्त मंदिर में विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का

आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त वहां की हरिजन बस्ती में भी प्रवचन हुआ।

मोगा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो तथा राजयोग शिविर के कार्यक्रम आयोजित किये गए जिनसे लगभग ८०० आत्माएं लाभान्वित हुईं।

करनाल सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां से कुछ दूर कैथल शहर में मानव दिव्यीकरण आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि म्यूनिसिपल कमेटी के अधिकारी भ्राता चन्द्रसिंह जी थे। इस अवसर पर कई वक्ताओं ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये तथा यह सम्मेलन बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

मेहसाना सेवाकेन्द्र की ओर से निकटवर्ती गांव धीनोज में विश्व शान्ति सप्ताह मनाया गया, जिसमें आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन, राजयोग शिविर, ज्ञान शिविर आदि का समावेश किया गया। इसके अतिरिक्त घनिष्ट ग्राम-सुधार सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत आजोल, मकाखाड, अण्बोड, प्रतापनगर, देलवाड, कृष्णनगर, पाटन पुरा, जामला आदि गांवों की ईश्वरीय सेवा की गई।

जयपुर (राजापार्क) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर नौ देवियों की झांकी चार दिन तक सजाई गई तथा साथ में संग्रहालय भी खोला गया। दोनों से लगभग ८०० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला।

भरूच सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि देशाड गांव में एक विशाल मंदिर बनने के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय "विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया, जिससे लगभग २०,००० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त भरूच जिला सरकारी संघ द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया।

मणिनगर (अहमदाबाद) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां पर ग्यारहवां वार्षिकोत्सव, बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में एक सेमिनार भी आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त पटेलवाडी बावला नगर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी, पांच चैतन्य देवियों की झांकी और राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। साथ में एक आध्यात्मिक सम्मेलन भी रखा गया जिसमें काफी संख्या में विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रदर्शनी से लगभग ८००० आत्माओं ने लाभ उठाया।

हिसार सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जनवरी से अप्रैल तक शांति सम्मेलन, आध्यात्मिक प्रदर्शनी प्रोपैक्टर शो, प्रवचन तथा राजयोग शिविरों द्वारा शहर तथा निकटवर्ती गांवों की हजारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया। जिससे यहां के लोगों में आध्यात्मिक लहर फैल गई है।

आगरा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि शाह गंज, फतेहाबाद आगरा होली मेला तथा एत्मादपुर के कंस मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनियां लगाई गईं। प्रदर्शनी के साथ-साथ प्रवचन तथा राजयोग शिविरों का भी आयोजन किया गया। जिनसे हजारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया।

हरिद्वार सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि ऋषिकेश, देहरादून, हरिद्वार में विभिन्न फैक्टरियों में "उद्योग में योग आध्यात्मिक प्रदर्शनी" लगाई गई जिनसे लगभग ६५०० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया। इस प्रदर्शनी से फैक्टरियों में कार्य करने वाले सभी वर्गों के लोग बहुत प्रभावित हुए।

कृष्णा नगर (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्ती मंडावली गांव में दो दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा तथा इस नए प्रकार की प्रदर्शनी देखकर लोग बहुत प्रभावित हुए।

बड़ौदा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बड़ौदा के हरणी रोड विस्तार में चार दिन के लिये "मानव एकता आध्यात्मिक मेले" का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन बड़ौदा के मेयर डा० वी० सी० पटेल ने किया। मेले से लगभग ८००० आत्माओं ने, योग शिविर तथा ज्ञान शिविर से लगभग २०० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त बड़ौदा के सलाट वाडा, अलकापुरी, वारशिया और प्रतापनगर में दो-दो दिन के लिये "विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी" लगाई गई जिनसे लगभग २५०० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। ●

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संगम प्रिंटिंग सर्विस कं० शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (B)—70